पाकिस्तान को हंगोर क्लास किलर... पेज 5

दैनिक कारखाने का सफर

मुकाबले के चक्कर में आदमी का जीवन एक कारखाने के समान हो गया है, आदमी का सबसे विश्वसनीय अखबार

देवी पार्वती की ममता ने दिलाया... पेज 7

वर्ष 6, अंक 328 | भोपाल, रविवार 10 मई, 2026 | ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष, अष्टमी 2083 | मूल्य 2 रुपए

बंगाल में वामपंथ के 34 साल श्रृंखला-4, हर रविवार

बंगाल चुनाव 2026: क्या यह `पॉलिटिकल सुसाइड´ के अंत की शुरुआत है ?

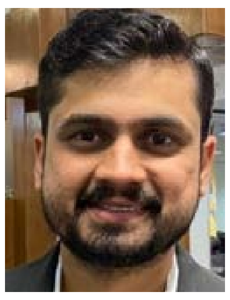

लेखकः अभिषेक द्विवेदी

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

बंगाल के चुनावी इतिहास में वर्ष 2026 एक ऐसी तारीख बनकर उभरा है, जिसने दशकों पुराने सत्ता समीकरणों को पलट दिया है। पहली बार भारतीय जनता पार्टी (BJP) को राज्य की कमान सौंपकर, बंगाल की जनता ने उस 'सिंडिकेट राज' और 'कट मनी' संस्कृति के खिलाफ अपना सबसे बड़ा जनादेश दिया है। लेकिन क्या केवल चेहरे बदलने से किस्मत बदल जाएगी? या हम वास्तव में एक नए युग की दहलीज पर खड़े हैं?

'पार्टी ही सरकार है' के चक्र को तोड़ना

बंगाल की सबसे बड़ी त्रासदी यह रही है कि यहाँ 'पार्टी' और 'सरकार' के बीच की लकीर मिट गई थी। चाहे वह वामपंथ का दौर हो या टीएमसी का, सत्ता का केंद्र सचिवालय के बजाय पार्टी ऑफिस बन गया था। नई सरकार के सामने सबसे बड़ी चुनौती इस 'पॉलिटिकल सोसाइटी' को भंग करना है।

"जब पुलिस और प्रशासन पार्टी कैडरों के बजाय संविधान के प्रति जवाबदेह होंगे, तभी बंगाल का असली पुनर्जागरण होगा"।

डर से मुक्तिः 'मौन' का टूटना- पॉडकास्ट और जमीनी रिपोर्ट्स बताती हैं कि बंगाल में 'साइलेंट वोटिंग' का एक बड़ा कारण हिंसा का डर रहा है। भाजपा की सरकार बनने के साथ ही उम्मीद जगी है कि अब मतदान के बाद किसी का घर जलाया नहीं जाएगा या किसी पति को उसकी पत्नी के सामने बाहर खींचकर मारा नहीं जाएगा। लोकतंत्र में जब 'डर' का अंत होता है, तभी विकास का मार्ग प्रशस्त होता है।

महिला सुरक्षाः अब केवल 'दीदी' नहीं, 'न्याय' की बारी- आर.जी. कर मेडिकल कॉलेज की घटना ने बंगाल की आत्मा को जो घाव दिए थे, उसका इलाज केवल संवेदनाओं से नहीं, बल्कि सख्त प्रशासनिक सुधारों से होगा।

संवेदनशीलताः नई सरकार से उम्मीद है कि वह पीड़ितों को दोष देने के बजाय अपराधियों में कानून का खौफ पैदा करेगी।

कार्य संस्कृतिः कार्यस्थलों पर महिलाओं की सुरक्षा केवल एक मुद्दा नहीं, बल्कि प्राथमिकता होनी चाहिए।

क्या समय वास्तव में बदलने वाला है?

यह बदलाव केवल राजनीतिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक होना चाहिए। बंगाल को उस 'हैंगओवर' से बाहर निकलना होगा कि हम महान थे; हमें यह स्वीकार करना होगा कि हमें फिर से महान बनना है। जब औद्योगिक घरानों को 'सिंडिकेट' को चंदा नहीं देना पड़ेगा, जब युवाओं को नौकरी के लिए बेंगलुरु नहीं जाना पड़ेगा, और जब बंगाल की बेटियाँ रात में बिना डरे घर लौटेंगी—तभी हम कह पाएंगे कि "अमार सोनार बांग्ला" (मेरा सोने का बंगाल) वास्तव में लौट आया है।

निष्कर्षः वह मिट्टी जो कभी टैगोर की कविताओं और सुभाष चंद्र बोस की क्रांति से महकती थी, आज एक बार फिर करवट ले रही है। यह जीत केवल एक पार्टी की नहीं, बल्कि उस आम बंगाली की है जिसने सालों तक अपनी आवाज को दबाए रखा था। आज हावड़ा ब्रिज पर खड़ा हर युवा उस सूरज को देख रहा है जो अब 'लाल' या 'नीला' नहीं, बल्कि बंगाल के उज्ज्वल भविष्य के सिंदूरी रंग जैसा है।

सीटू यूनियन का आंदोलन
काला फीता बांधकर सैकड़ों कर्मचारियों ने विरोध स्वरूप किया सामूहिक भोज

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

भेल कारखाने में इंसेंटिव रिवीजन की मांग को लेकर सीटू यूनियन द्वारा चरणबद्ध आंदोलन लगातार जारी है। इसी कड़ी में यूनियन पदाधिकारी ने भेल भोपाल की स्टाफ कैंटीन में जाकर कर्मचारियों सामूहिक भोज किया और काला बैच लगाकर विरोध दर्ज किया। इस अभियान के दौरान कर्मचारियों में इंसेंटिव रिवीजन को लेकर स्पष्ट रूप से एकजुटता देखने को मिल रही है। बड़ी संख्या में कर्मचारी इस आंदोलन में शामिल हो रहे हैं, जिससे यह संकेत मिल रहा है कि आने वाले समय में यह आंदोलन और भी बड़ा रूप ले सकता है। यूनियन के कार्यकारी महामंत्री दीपक गुप्ता ने जानकारी देते हुए बताया कि यदि जल्द ही JCM की तारीख नहीं घोषित की गई तो आंदोलन ओर तेज किया जाएगा एवं अगली कड़ी में पुतला दहन किया जाएगा। उन्होंने आगे कहा कि यदि भेल प्रबंधन जल्द ही इंसेंटिव रिवीजन को लेकर कोई ठोस कदम नहीं उठाता है, तो यूनियन आंदोलन को और तेज करते हुए उग्र रूप देने के लिए बाध्य होगी। मांग पूरी होने तक यह आंदोलन लगातार जारी रहेगा।

प्रतिनिधि यूनियन एआईबीईयू के साथ आईएफएक्स सभागार में आयोजित हुई प्रोडक्शन रिव्यू मीटिंग
बीएचईएल की ऐतिहासिक उपलब्धियों एवं आगामी बीएचईएल भोपाल के लक्ष्यों पर हुई विस्तृत चर्चा

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

भेल भोपाल के आईएफएक्स विभाग सभागार में आज प्रोडक्शन रिव्यू पेज एक मीटिंग का आयोजन किया गया, जिसमें वर्ष 2025-26 के उत्पादन, वित्तीय उपलब्धियों एवं आगामी वित्तीय वर्ष 2026-27 के लक्ष्यों एवं चुनौतियों पर विस्तृत चर्चा की गई।

मीटिंग में बीएचईएल प्रबंधन की ओर से कार्यपालक निदेशक प्रदीप कुमार उपाध्याय, जीएम एचआर टी.यू. सिंह, जीएम एसओएम राजेश अग्रवाल सहित एचआर एवं आईआर विभाग की टीम उपस्थित रही। वहीं यूनियन की ओर से महासचिव रामनारायण गिरी के नेतृत्व में यूनियन पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता सम्मिलित हुए।

बैठक में प्रबंधन द्वारा भोपाल यूनिट एवं कॉर्पोरेट स्तर के वित्तीय आंकड़े प्रस्तुत किए गए। प्रस्तुत जानकारी के अनुसार बीएचईएल कॉर्पोरेशन ने लगभग 19 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज करते हुए 33,782 करोड़ के राजस्व लक्ष्य को प्राप्त किया तथा टैक्स के बाद लगभग 1600 करोड़ का शुद्ध लाभ अर्जित किया। प्रबंधन द्वारा इसे बीएचईएल के लिए ऐतिहासिक उपलब्धि बताते हुए कहा गया कि कंपनी पुनः विकास की गति में तेजी से आगे बढ़ रही है।

वहीं बीएचईएल भोपाल यूनिट ने वित्तीय वर्ष 2025-26 में लगभग 4647 करोड़ का टर्नओवर, 581 करोड़ पीबीटी एवं 5530 करोड़ का कैश कलेक्शन हासिल किया। ब्लॉक स्तर पर टीसीबी ने 1606 करोड़, ईएम ने 929 करोड़, टीएक्सएम ने 545 करोड़, हाइड्रो ने 635 करोड़, थर्मल ने 411 करोड़, स्विच गियर ने 471 करोड़ एवं फीडर्स ने 51 करोड़ का योगदान दिया। साथ ही आगामी वित्तीय वर्ष 2026-27 के लिए लगभग 4716 करोड़ के लक्ष्य एवं उससे जुड़े चुनौतियों से कर्मचारियों को अवगत कराया गया।

बैठक में कार्यपालक निदेशक द्वारा कहा गया कि यह अभूतपूर्व उपलब्धि कर्मचारी, सुपरवाइजर, अधिकारी, ठेका श्रमिक एवं सोसाइटी वर्करों की मेहनत, समर्पण और टीमवर्क का परिणाम है। उन्होंने यह भी कहा कि इस उपलब्धि में एआईबीईयू यूनियन का पूरा सहयोग रहा है। यूनियन द्वारा भी सफलतापूर्वक प्रोडक्शन पूरा करने का श्रेय प्रबंधन एवं कर्मचारियों को देते हुए कर्मचारियों की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला गया। यूनियन ने बैठक के दौरान पिछले वर्षों में कर्मचारियों की मूलभूत सुविधाओं में आई कमी का मुद्दा उठाते हुए हॉस्पिटल, टाउनशिप, फैक्ट्री एवं कैंटीन से जुड़े विषयों पर विस्तृत चर्चा की तथा समस्याओं के शीघ्र निराकरण का आग्रह किया।

महासचिव रामनारायण गिरी ने कॉर्पोरेट प्रबंधन, विशेष रूप से सीएमडी एवं डायरेक्टर रामनाथन के नेतृत्व की सराहना करते हुए यूनिट स्तर पर कार्यपालक निदेशक एवं जीएम एचआर के कुशल नेतृत्व की भूरी-भूरी प्रशंसा की।

बैठक में अध्यक्ष सत्येंद्र कुमार, कार्यवाहक अध्यक्ष आशीष सोनी, कोषाध्यक्ष विशाल वाणी, संगठन सचिव राजमल बैरागी, वरिष्ठ उपाध्यक्ष विजेंद्र पाटिल, उपाध्यक्ष रोहित कुमार, रामानंदन सिंह एवं महिला पदाधिकारी सत्या पहाड़े, पिंकी मिश्रा सहित अन्य पदाधिकारियों ने कर्मचारी हितों से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर अपने विचार रखे।

साथ ही कॉर्पोरेट स्तर से जुड़े विषयों जैसे इंसेंटिव स्कीम के पुनरीक्षण, लैपटॉप सुविधा, जेसीएम मीटिंग बुलाकर पीपी बोनस निर्धारण आदि मुद्दों पर भी विस्तार से चर्चा की गई।

बैठक के अंत में यूनियन द्वारा कैंटीन में एसी लगवाने की मांग को लेकर हस्ताक्षरयुक्त ज्ञापन कार्यपालक निदेशक को सौंपा गया तथा उनसे कैंटीन को उच्च स्तर का बनाने के साथ ही कैंटीन का निरीक्षण करने का आग्रह किया गया, ताकि कर्मचारियों को उपलब्ध भोजन एवं सुविधाओं की वास्तविक स्थिति से अवगत कराया जा सके।

भेल भोपाल में रिकॉर्ड वित्तीय प्रदर्शन, कर्मचारियों की मांगों को लेकर हेवू भारतीय मजदूर संघ ने उठाई आवाज

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

सार्वजनिक क्षेत्र की अग्रणी कंपनी भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड की भोपाल इकाई ने वित्तीय वर्ष 2025-26 में ऐतिहासिक उपलब्धि दर्ज की है। शुक्रवार को भेल भोपाल प्रबंधन ने सभी मान्यता प्राप्त यूनियन प्रतिनिधि हेवु बीएमएस के समक्ष वित्तीय वर्ष के विस्तृत वित्तीय परिणाम प्रस्तुत किए। बैठक में इकाई के रिकॉर्ड उत्पादन, लाभ और आगामी रणनीतियों पर चर्चा की गई।

बैठक के दौरान भेल भोपाल की प्रथम क्रमांक प्रतिनिधि यूनियन हेवू भारतीय मजदूर संघ के वरिष्ठ उपाध्यक्ष पी.के. अग्रवाल के नेतृत्व में यूनियन प्रतिनिधियों एवं कार्यकर्ताओं ने कार्यपालक निदेशक पी.के. उपाध्याय को पुष्पगुच्छ भेंट कर रिकॉर्ड उत्पादन पूर्ण करने पर बधाई दी। यूनियन ने वित्तीय वर्ष 2026-27 के उत्पादन लक्ष्य को हासिल करने में पूर्ण सहयोग का भरोसा भी दिलाया।

शानदार वित्तीय प्रदर्शन- भेल भोपाल ने वित्तीय वर्ष 2025-26 में:

- 4,647 करोड़ का टर्नओवर
- 581 करोड़ का प्रॉफिट (PBT)
- 5,530 करोड़ का कैश कलेक्शन दर्ज किया।

ब्लॉकवार योगदान में TCB ने 1,606 करोड़, EM ने 929 करोड़, हाइड्रो ने 635 करोड़, TXM ने 545 करोड़, स्विचगियर ने 471 करोड़, थर्मल ने 411 करोड़ तथा फीडर्स ने 51 करोड़ का योगदान दिया।

प्रबंधन ने वित्तीय वर्ष 2026-27 के लिए 4,716 करोड़ का लक्ष्य निर्धारित किया है।

कर्मचारियों को सफलता का श्रेय- यूनियन ने इस उपलब्धि का श्रेय भेल भोपाल के सभी कर्मचारियों, सुपरवाइजर्स, अधिकारियों एवं ठेका श्रमिकों की मेहनत, अनुशासन और समर्पण को दिया। यूनियन नेता श्री पी के अग्रवाल ने कहा कि यह सफलता सभी वर्गों के संयुक्त प्रयासों का परिणाम है।

यूनियन ने रखीं प्रमुख मांगें- वित्तीय प्रदर्शन को देखते हुए हेवू भारतीय मजदूर संघ ने आगामी JCM बैठक में कर्मचारियों के हित में कई महत्वपूर्ण मांगें रखने की घोषणा की है। इनमें प्रमुख रूप से:

- पीपी बोनस 60,000
- न्यूनतम रिवॉर्ड 10,000
- EL एन्कैशमेंट पुनः लागू करना
- लैपटॉप स्कीम पुनः शुरू करना
- माता-पिता चिकित्सा आय सीमा 25,000 करना
- अनुकंपा नियुक्तियों में तेजी
- EPS-95 के अंतर्गत उच्च पेंशन लागू करना
- प्रत्येक वर्ष दो जोड़ी यूनिफॉर्म उपलब्ध कराना शामिल हैं।

इसके अलावा कैंटीन आधुनिकीकरण, केंद्रीयकृत एसी व्यवस्था, नई रोटी मशीन और प्रशिक्षित कुक की नियुक्ति जैसी सुविधाओं की भी मांग की गई है।

शीघ्र JCM बैठक की मांग-

यूनियन ने प्रबंधन से शीघ्र JCM बैठक आयोजित करने की मांग करते हुए कहा कि कर्मचारियों की समस्याओं का समयबद्ध समाधान संगठन की प्रगति और उत्पादन गुणवत्ता बनाए रखने के लिए आवश्यक है।

यूनियन ने मांग कि कंपनी की निरंतर प्रगति और बढ़ते मुनाफे का न्यायसंगत लाभ कर्मचारियों तक पहुंचे।

भेल कर्मचारियों की ज्वलन्त समस्याओं के शीघ्र निराकरण की मांग की एचएमएस यूनियन ने

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

सैनिक इलेक्ट्रिकल्स ट्रेड यूनियन एचएमएस ने भेल भोपाल के कार्यपालक निदेशक प्रदीप कुमार उपाध्याय को ज्ञापन सौंपा। इसमें यूनियन ने कहा है कि वित्तीय वर्ष 2025-26 में बीएचईएल ने 1578 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ अर्जित किया है। यह उपलब्धि केवल बीएचईएल कर्मचारियों के समर्पण, कठिन परिश्रम एवं कंपनी के प्रति निष्ठा का परिणाम है। कर्मचारियों के अथक प्रयासों से ही कंपनी की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हुई है।

इस अवसर पर यूनियन ने निम्नलिखित ज्वलन्त समस्याओं के शीघ्र निराकरण की मांग की गई –

- पीपीपी हेतु अतिशीघ्र संयुक्त समिति की बैठक आयोजित की जाए तथा कर्मचारियों को न्यूनतम 60,000/- पीपीपी प्रदान किया जाए।
- रिवार्ड स्कीम के पुनरीक्षण हेतु सब-कमेटी की बैठक तत्काल बुलाकर कर्मचारियों को न्यूनतम 10,000/- की राशि प्रदान की जाए।
- कर्मचारी के निधन की स्थिति में परिवार के एक सदस्य को अनुकम्पा नियुक्ति प्राप्त होने तक आवास, चिकित्सा एवं शिक्षा सुविधाएँ यथावत जारी रखी जाएं।
- कस्तूरबा अस्पताल को विशेषज्ञ चिकित्सकों, पर्याप्त पैरा-मेडिकल स्टाफ एवं आधुनिक जांच सुविधाओं से सुसज्जित किया जाए।
- जर्जर हो चुकी टाउनशिप के स्थान पर सर्व-सुविधायुक्त आधुनिक मल्टीप्लेक्स आवासीय कॉम्प्लेक्स का निर्माण कराया जाए
- हेजार्ड एरिया में कार्यरत कर्मचारियों को हेजार्ड भत्ता प्रदान किया जाए।
- स्थानांतरण नीति को तर्कसंगत, पारदर्शी एवं सरल बनाया जाए।
- वर्कर एवं अधिकारियों के अनुपात को संतुलित किया जाए, जिससे कार्यप्रणाली अधिक प्रभावी एवं सुचारु हो सके।
- सुपरवाइजर एवं अधिकारियों के 15% पर्क में की जा रही कटौती तत्काल बंद की जाए।
- अर्जित अवकाश के नगदीकरण की पूर्व व्यवस्था यथावत जारी रखी जाए
- कोविड-19 महामारी के दौरान दिवंगत हुए कर्मचारियों के परिवारों को दी जा रही अनुकम्पा राशि, संबंधित कर्मचारी की सेवानिवृत्ति तिथि तक निरंतर प्रदान की जाए
- कर्मचारियों को पूर्व में प्रदान किए गए लैपटॉप की अवधि पाँच वर्ष पूर्ण हो चुकी है, अतः सभी कर्मचारियों को पुनः नवीन लैपटॉप उपलब्ध कराए जाएं
- कर्मचारियों की सुविधा हेतु कैंटीन में उन्नत गुणवत्ता की रोटी बनाने वाली मशीन शीघ्र उपलब्ध कराई जाए, जिससे कर्मचारियों को गुणवत्तापूर्ण एवं समय पर भोजन प्राप्त हो सके
- प्रत्येक मशीन पर कार्यरत कर्मचारियों के लिए बैठने हेतु एक-एक कुर्सी की व्यवस्था सुनिश्चित की जाए, ताकि कार्य के दौरान आवश्यकतानुसार आराम मिल सके
- प्रत्येक विभाग में कर्मचारियों के लिए चेंजिंग रूम एवं रेस्ट रूम की समुचित व्यवस्था की जाए, जिससे कर्मचारियों को आवश्यक सुविधाएं प्राप्त हो सकें
- सभी विभागों में लगाए गए वाटर कूलरों का नियमित एवं उचित मेंटिनेंस सुनिश्चित किया जाए, ताकि कर्मचारियों को स्वच्छ एवं ठंडा पेयजल निरंतर उपलब्ध हो सके

अतः आपसे अनुरोध है कि उपरोक्त समस्याओं पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करते हुए इनके शीघ्र निराकरण हेतु आवश्यक कार्यवाही करने का कष्ट करें, ताकि कर्मचारियों का मनोबल एवं विश्वास और अधिक सुदृढ़ हो सके

दैनिक कारखाने का सफर अखबार का संपादकीय कार्यालय

गोबिंद टॉवर, क्वालिटी रेस्टोरेंट के पास, एसबी स्टूडियों के ऊपर पिपलानी पेट्रोल पंप के पास, सोनागिरी चौराहा रायसेन रोड भेल भोपाल। मोबाइल नंबरः 9826035849, 9425006706

गतांक से आगे : लोक कल्याण हेतु दादाजी का अवतरण

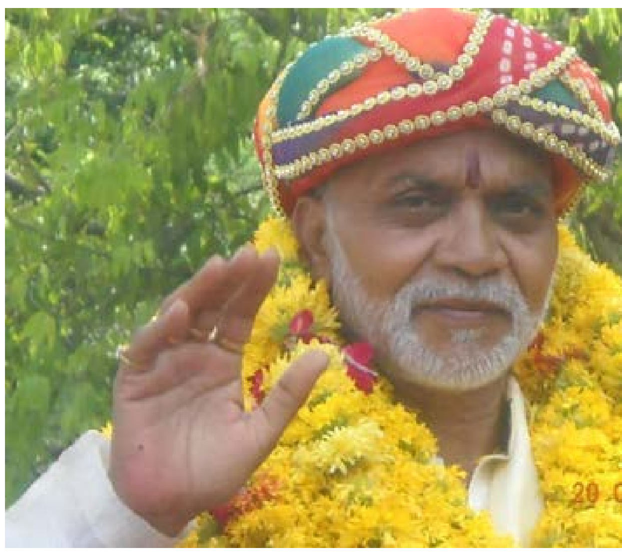

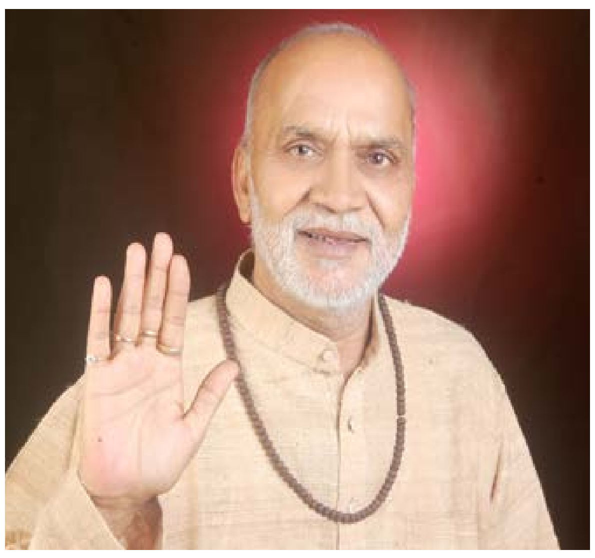

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

दादाजी गुरुदेव के भक्तों के अनुभव और उनकी भक्ति की महिमा सद्गुरु की महिमा का वास्तविक प्रमाण उनके भक्तों के जीवन में दिखाई देता है। शब्द जहाँ सीमित हो जाते हैं, वहाँ अनुभव स्वयं बोल उठते हैं। सद्गुरु श्री दादाजी गुरुदेव के अनगिनत भक्तों ने अपने जीवन में उनकी कृपा का ऐसा सजीव स्पर्श अनुभव किया है, जिसने उनके अंतर्मन को पूर्णतः परिवर्तित कर दिया। भक्ति का मार्ग केवल पूजा-अर्चना तक सीमित नहीं होता, बल्कि यह हृदय की गहराइयों से उत्पन्न वह भाव है, जिसमें श्रद्धा, प्रेम और पूर्ण समर्पण समाहित होता है। दादाजी गुरुदेव के भक्त इसी भाव से उनके चरणों में जुड़े रहते हैं, और यही भाव उनके जीवन में दिव्यता का संचार करता है। अनेक भक्तों ने अनुभव किया है कि जब वे निराशा, पीड़ा या संकट के क्षणों में दादाजी गुरुदेव का स्मरण करते हैं, तब उन्हें एक अदृश्य शक्ति का सहारा प्राप्त होता है। यह सहारा उन्हें न केवल मानसिक शांति देता है, बल्कि कठिन परिस्थितियों का सामना करने का साहस भी प्रदान करता है। यही गुरुकृपा का प्रत्यक्ष अनुभव है। एक वृद्ध भक्त, जो वर्षों से शारीरिक कष्टों से पीड़ित थे, उन्होंने जब श्रद्धा और विश्वास के साथ दादाजी गुरुदेव का नाम स्मरण प्रारंभ किया, तो उनके भीतर एक अद्भुत शांति का संचार हुआ। भले ही बाहरी परिस्थितियाँ तुरंत न बदली हों, परंतु उनके मन की स्थिति पूर्णतः परिवर्तित हो गई। यही सच्ची भक्ति का चमत्कार है जो मन को स्थिर और संतुष्ट बना देता है। एक अन्य अनुभव में, एक युवा साधक जीवन के उद्देश्य को लेकर भ्रमित था। दादाजी गुरुदेव के सत्संग और उनके उपदेशों के माध्यम से उसे अपने जीवन का सही मार्ग मिला। उसके भीतर आत्मविश्वास जागृत हुआ और उसने अपने जीवन को सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ाया। यह परिवर्तन केवल ज्ञान से नहीं, बल्कि भक्ति और गुरुकृपा के संगम से संभव हुआ। दादाजी गुरुदेव के भक्तों की विशेषता यह है कि वे अपनी भक्ति को केवल व्यक्तिगत लाभ तक सीमित नहीं रखते, बल्कि उसे सेवा और सद्भाव के रूप में समाज में प्रसारित करते हैं। उनके जीवन में विनम्रता, करुणा और सहिष्णुता का समावेश स्वतः हो जाता है। यही भक्ति की वास्तविक महिमा है, जो व्यक्ति को श्रेष्ठ मानव बनाती है।

भक्ति का गूढ़ रहस्य यह है कि जब साधक अपने अहंकार को त्यागकर पूर्णतः गुरुदेव के चरणों में समर्पित हो जाता है, तब वह स्वयं को एक दिव्य संरक्षण में अनुभव करता है। यह अनुभव उसे हर परिस्थिति में संतुलित और स्थिर बनाए रखता है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि दादाजी गुरुदेव के भक्तों के अनुभव केवल व्यक्तिगत कथाएँ नहीं हैं, बल्कि वे उस दिव्य सत्य के साक्षात प्रमाण हैं कि सच्ची भक्ति में अपार शक्ति होती है। यह शक्ति न केवल जीवन की कठिनाइयों को सरल बनाती है, बल्कि साधक को आत्मिक शांति और आनंद की अनुभूति भी कराती है। विनम्र प्रार्थना है कि हम सभी के हृदय में भी ऐसी ही निष्काम, निर्मल और अटूट भक्ति जागृत हो, जिससे हमारा जीवन सद्गुरु की कृपा से प्रकाशित हो सके।

10 टीमों के बीच हुआ कड़ा मुकाबला

आगा क्लब इंटर स्कूल बास्केटबॉल टूर्नामेंट के पहले दिन खिलाड़ियों ने दिखाया दमखम

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

राजधानी के प्रतिष्ठित आगा क्लब के मैदान पर आयोजित तीन दिवसीय 'इंटर स्कूल बास्केटबॉल टूर्नामेंट 2026' के पहले दिन रोमांच चरम पर रहा। प्रतियोगिता के दूसरे दिन कुल 10 टीमों के बीच नॉकआउट मुकाबले खेले गए, जिसमें खिलाड़ियों ने अपने कौशल और खेल भावना का शानदार प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता के नॉकआउट राउंड में जीत दर्ज कर कई स्कूलों ने अगले दौर में अपनी जगह पक्की की:

बॉयज वर्ग में आगा क्लब ने सेंट थॉमस स्कूल को 28-10 के अंतर से हराया। एम जी एम (MGM) स्कूल ने सेंट फ्रांसिस पर 16-08 से जीत दर्ज की। कैंपियन स्कूल, शाहपुरा ने एकतरफा मुकाबले में कैंपियन भौंरी को 26-07 से शिकस्त दी। गर्ल्स वर्ग में सरस्वती विद्या मंदिर ने आगा क्लब (बी) को 12-04 से पराजित किया। सेंट जोसेफ को-एड स्कूल ने एम जी एम स्कूल पर 29-00 के विशाल अंतर से जीत हासिल कर अगले राउंड में प्रवेश किया।

मैच के दौरान खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन करने के लिए अंतरराष्ट्रीय कोच और विक्रम अवॉर्डी श्री मुख्तियार सिंह जी विशेष रूप से उपस्थित रहे। उन्होंने खिलाड़ियों को बास्केटबॉल की बारीकियों और खेल के प्रति अनुशासन के महत्व के बारे में बताया।

टूर्नामेंट को सफल बनाने में आगा क्लब की

कार्यकारिणी के सदस्य महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। महासचिव श्री वेदप्रकाश शर्मा के नेतृत्व में संदीप लोखंडे, सौरभ कुशवाहा, कमलेश पाल, सुशीलकांत गोहला, प्रशांत सलामे, विनय सविता, योगेश सराठे, सोनू कुशवाहा, , श्री निर्मल बोवाडे, आर एस सिसोदिया जी, श्री राकेश शाक्य और बास्केटबॉल कोच श्री ए सुरेश और रवि पवार सहित पूरी टीम खेल मैदान पर मुस्तैद है।

तीन दिवसीय इस प्रतियोगिता का समापन और बहुप्रतीक्षित फाइनल मुकाबला कल, 10 मई 2026 को आयोजित किया जाएगा, जिसमें विजेता टीमों के बीच खिताबी भिड़ंत होगी।

नेशनल लोक अदालत अयोजित, बिजली, जलकर और संपत्तिकर के सरचार्ज में 100% तक की छूट, लंबित मामलों पर फोकस

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

मध्यप्रदेश में शनिवार 9 मई को इस वर्ष की दूसरी राष्ट्रीय लोक अदालत आयोजित की। आम लोगों को त्वरित और सुलभ न्याय देने के उद्देश्य से होने वाली इस लोक अदालत में बिजली बिल, जलकर और संपत्ति कर के सरचार्ज में 100 प्रतिशत तक की छूट का लाभ दिया।

इसके साथ ही संपत्ति विवाद, बैंक रिकवरी, चेक बाउंस, मोटर दुर्घटना मुआवजा, पारिवारिक और वैवाहिक विवाद सहित कई मामलों का आपसी सहमति से निपटारा कराया जा रहा है।

भोपाल में भी राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन जिला न्यायालय, बैरसिया स्थित सिविल न्यायालय और श्रम न्यायालयों में एक साथ किया। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की ओर से इसके लिए कुल 61 पीठों का गठन किया गया। इन पीठों में सिविल, बैंकिंग, पारिवारिक, श्रम और अन्य लंबित मामलों की सुनवाई कर समझौते के आधार पर निराकरण किया जाएगा। बता दें कि, लोक अदालत में इस बार 13 हजार 186 लंबित मामलों को शामिल किया गया है। इसके अलावा श्रम न्यायालयों से जुड़े 233 प्रकरण और 53 अन्य मामलों का भी निपटारा किया जा रहा है। अधिकारियों के अनुसार, बैंक रिकवरी, मोटर दुर्घटना दावा, चेक बाउंस और पारिवारिक विवादों के मामलों पर विशेष फोकस रहेगा ताकि लोगों को लंबी कानूनी प्रक्रिया से राहत मिल सके।

विधायक प्रतिनिधि ने गेंहू उपर्जन केन्द्रों का निरीक्षण किया

दैनिक कारखाने का सफर। सारंगपुर

सारंगपुर विधायक प्रतिनिधि पृथ्वीराज टैटवाल ने शनिवार को मार्केटिंग सोसायटी सारंगपुर गौतम बुद्ध स्व सहायता समूह निहाल सोसायटी मऊ, उपर्जनकेन्द्रो का निरीक्षण किया श्री टेटवाल ने किसानों के गेहूं तलवाई में कोई दिक्कत न आए, सभी किसानो से बात चित कि उनकी समस्या का तुरन्त समाधान किया, सभी प्रबंधक से बात कर कहा कि किसानों को किसी भी प्रकार की कोई दिक्कत नहीं आना चाहिए, इस दौरान भाजपा मंडल अध्यक्ष महेश पुष्पद पढ़ना मंडल अध्यक्ष शेखर शर्मा, सतीष बेस, चिराग सोनी,किसान केशरसिंह पटेल लववंशी, मोहन लववंशी मीडिया प्रभारी , महेश लववंशी ,उक्त जानकरी मोहन लववंशी मंडल मिडिया प्रभारी ने दी।

यादव समाज के नवनियुक्त पदाधिकारियों का भव्य अभिनंदन समारोह संपन्न

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

यादव एजुकेशन एंड करियर प्रमोशन सोसायटी, भोपाल द्वारा प्रदेश के विभिन्न निगम-मंडलों में नियुक्त यादव समाज के पदाधिकारियों के सम्मान में आज एक भव्य अभिनंदन समारोह का आयोजन किया गया। यह समारोह आनंद नगर स्थित यादव समाज के निर्माणाधीन छात्रावास परिसर में आयोजित हुआ, जिसमें समाज के वरिष्ठजनों एवं गणमान्य नागरिकों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। समारोह में अपेक्स बैंक के नवनियुक्त प्रशासक महेंद्र यादव तथा उज्जैन विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष मुकेश यादव का पुष्पमालाओं एवं शॉल-श्रीफल भेंट कर सम्मान किया गया। इस अवसर पर प्रदेश के पूर्व शिक्षा मंत्री एवं सागर के पूर्व सांसद एवं पूर्व मंत्री लक्ष्मीनारायण यादव तथा मध्यप्रदेश कुश्ती संघ, के अध्यक्ष श्री नारायण यादव, आशाराम यादव, पूर्व सदस्य, मध्य प्रदेश पिछड़ा वर्ग आयोग, खातेगांव के पार्षद लक्ष्मी यादव, सुरेन्द्र यादव, प्रदेश उपाध्यक्ष, भाजपा पिछडा वर्ग, उज्जैन, पूर्व पार्षदद्वय बलवीर यादव, दिनेश यादव विशेष रूप से उपस्थित रहे। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए अपेक्स बैंक के

प्रशासक महेंद्र यादव ने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में प्रदेश सरकार समाज के सभी वर्गों के कल्याण एवं विकास के लिए समर्पित भाव से कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं और विकास कार्यों को समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाना हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है।

विशिष्ट अतिथि लक्ष्मीनारायण यादव ने अपने उद्बोधन में कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने समाज के लोगों को शासन-प्रशासन में महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां सौंपकर यादव समाज के मान-सम्मान और गौरव बढ़ाया है। वहीं, मध्यप्रदेश कुश्ती संघ के अध्यक्ष और सीएम डॉ. मोहन यादव के बड़े भाई नारायण यादव ने सभी नवनियुक्त पदाधिकारियों को शुभकामनाएं देते हुए यादव एजुकेशन एंड करियर प्रमोशन सोसायटी द्वारा शिक्षा एवं सामाजिक उत्थान के क्षेत्र में किए जा रहे कार्यों की सराहना की। कार्यक्रम में संस्था के श्री गणपति यादव ने स्वागत उद्बोधन दिया, जबकि कार्यक्रम का संचालन राजेश यादव ने किया। इस अवसर पर कृषि वैज्ञानिक केएस यादव, वरिष्ठ समाजसेवी एसएन यादव, शेर सिंह यादव, सर्वदेव यादव, राजेंद्र यादव सहित प्रदेश के विभिन्न जिलों से बड़ी संख्या में यादव समाज एवं एजुकेशन सोसाइटी के गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

जबलपुर में होगा साहू समाज का राष्ट्रीय एवं प्रदेश स्तरीय कार्यक्रम 23 एवं 24 मई को

संपूर्ण भारतवर्ष के समाज के पदाधिकारी जन प्रतिनिधि विधायक सांसद होंगे शामिल

मप्र तैलिक साहू सभा के नवनियुक्त पदाधिकारियों के सम्मान के साथ कार्यक्रम की रुपरेखा हेतु बैठक सम्पन्न

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

राज्य स्तरीय अखिल भारतीय तैलिक साहू सभा एवं मप्र तैलिक साहू सभा का राष्ट्रीय एवं प्रदेश स्तरीय कार्यक्रम आगामी 23 एवं 24 मई को जबलपुर में आयोजित होगा, कार्यक्रम की रुपरेखा हेतु मप्र तैलिक साहू सभा के प्रदेश अध्यक्ष श्री ओमप्रकाश साहू, राष्ट्रीय कार्यवाहक अध्यक्ष एवं राजनैतिक प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष श्री ताराचंद साहू, राष्ट्रीयएवं प्रदेश महिला अध्यक्ष श्री मति आभा दीपक साहू कार्यवाहक अध्यक्ष श्री रमेश कुमार साहू, कोषाध्यक्ष श्री मदन लाल साहू, राष्ट्रीय युवा कार्यवाहक अध्यक्ष प्रदेश अतिरिक्त महासचिव हीतेश साहू, की उपस्थिति में कचनार क्लब विजय नगर में बैठक का आयोजन किया गया।

बैठक में जबलपुर के नवनियुक्त पदाधिकारियों को सम्मानित किया गया तथा बैठक में 23 मई को मध्य प्रदेश तेलिक साहू सभा के नवनियुक्त पदाधिकारी के शपथ ग्रहण समारोह एवं राष्ट्रीय महिला सशक्तिकरण सम्मेलन हेतु 24 मई को अखिल भारतीय तैलिक साहू महा सभा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक की कार्यक्रम व्यवस्था हेतु विचार विमर्श कर कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए निणय लिया गया।

बैठक में कार्यक्रम के सफल संचालन के लिए विभिन्न समितियों का गठन कर पदाधिकारी को कार्य का दायित्व सोपा गया साथ ही साथ ही समस्त पदाधिकारी से एक टीम भावना के साथ कार्य करने के लिए प्रेरित किया गया समाज के पदाधिकारी एवं महिला मंडल की अधिकांश महिला सदस्यों ने अपनी सहभागिता प्रदान की साथ ही आगामी 23 एवं 24 मई के कार्यक्रम को ऐतिहासिक बनाते हुए नए आयाम स्थापित करने के लिए सभी पदाधिकारी ने संकल्प लिया तथा कार्य को गति प्रदान करने के लिए एकजुट होकर कार्य करने का आह्वान किया।

जबलपुर में कार्यक्रम की संभाल रही राष्ट्रीय महिला अध्यक्ष श्री मति आभा दीपक साहू ने प्रदेश के समस्त पदाधिकारी, समस्त मात्र शक्तियों से एवं समस्त राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्यों से कार्यक्रम में उपस्थित रहकर कार्यक्रम को सफल बनाने का आवाहन किया

बैठक का संचालन महासचिव अनिल कुमार साहू अकेला ने किया तथा आभार प्रदेश महिला संभाग प्रभारी श्री मति सरिता रविंद साहू जबलपुर ने किया। जिला साहू समाज जबलपुर के अध्यक्ष वीरेंद्र साहू, राधेश्याम जी साहू, दीपक साहू, कैलाश साहू, पार्षद राहुल साहू, राजनैतिक प्रकोष्ठ जिला अध्यक्ष श्रीकान्त साहू, उमेश साहू ओज, उदयभान साहू, डॉ पुरुषोत्तम साहू, इंजी प्रदीप साहू, एम के गोल्हानी, रामखिलावन साहू, एड सुबोध कठर, सुधीर साहू, अशोक साहू, संदीप साहू, प्रहलाद साहू, सतीश साहू, धीरज साहू, संजय साहू,राजकिरण साहू, रंजीत साहू, मनीष साहू, दिलीप साहू, डॉ निशा साहू, पार्षद रजनी साहू, पार्षद अरुणा साहू, श्रद्धा साहू, नीतू साहू, उल्का साहू, रानी साहू, विमला साहू, अर्चना साहू, सरिता साहू, रंजना साहू, सरिता साहू, आरती साहू, शिल्पा साहू, सुषमा साहू के साथ बड़ी संख्या में सामाजिक बंधु भगिनी उपस्थित थे।

उत्पादन वर्ष 2025-26 का परिणाम किया साझा

प्रबंधन के द्वारा आई एफ एक्स कांफ्रेंस हॉल में हेम्टू इंटक यूनियन के साथ मीटिंग संपन्न

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

उत्पादन वर्ष 2025--26 का परिणाम कर्मचारियों से साझा करने के लिए प्रबंधन के द्वारा आई एफ एक्स कांफ्रेंस हॉल में हेम्टू इंटक यूनियन के साथ मीटिंग संपन्न हुई।

मीटिंग में कार्यपालक निदेशक ने भेल भोपाल का परफॉर्मेंस साझा करते हुए बताया की आज भेल भोपाल के पास 17470 करोड़ के ऑर्डर है और भेल भोपाल इस वर्ष 4647 करोड़ का टर्नओवर प्राप्त किया जो की निर्धारित टर्न ओवर से ज्यादा है एवं 581 करोड़ का मुनाफा कमाया है। जो की पिछले वर्ष के मुकाबले 125% अधिक है, 2026/27 का टारगेट 4716 करोड़ रखा गया है जिसमे 660 करोड़ के ऑर्डर प्रस्तावित है।

यूनियन के अध्यक्ष राजेश शुक्ला ने अपनी बात रखते हुए सर्व प्रथम कार्यपालक निदेशक महोदय को कुशल नेतृत्व और सफलता पूर्वक लक्ष्य को पूर्ण करने पर बधाई दि, और भेल के कर्मठ कर्मचारियों का आभार जताया जिनके दिन रात मेहनत से इस लक्ष्य को प्राप्त किया जा सका। एवं कहा की जब भेल उन्नति कर रहा और अच्छा मुनाफा कमा रहा तो कर्मचारियों की विभिन्न लंबित मांगों को भी हल करना प्रबंधन की जिम्मेदारी होना चाहिए।

कर्मचारियों को पी पी पी बोनस शीघ्र ज्वाइंट कमेटी मीटिंग बुला कर तय किया जाना चाहिए, इस बार प्रॉफिट कार्पोरेट स्तर पर पिछली वर्ष की तुलना में तीन गुना हुआ है तो बोनस भी इस बार लाभ के अनुसार मिलना चाहिए। आगे अपनी बात रखते हुए कहा की जब भेल एक है तो भेल में एक समानता होनी चाहिए सभी जगह सब्सिडी एक समान मिले यह सुनिश्चित किया जाए। कोरोना काल में दिवंगत कर्मचारियों को मिलने वाली आर्थिक सहायता राशि 25000 निरंतर जारी रखना चाहिए।

भेल की लाइफ लाइन इंसेंटिव स्कीम को रिवाइज कर सम्मानजनक किया जाए एवं नियमो में बदलाव किया जाए जिससे प्रत्येक कर्मचारियों को इसका लाभ मिल सके।

यूनियन के महामंत्री अजीत गोंड ने सभी कर्मचारियों को प्रोडक्सन पूर्ण होने की बधाई दी।और कहा की भेल इस समय उन्नति कर रहा एवं भेल के पास दो लाख चालीस हजार करोड़ के ऑर्डर है इसे पूर्ण करने के लिए नई मशीन नई टेक्नोलॉजी की ओर बढ़ना चाहिए जिससे भविष्य में लक्ष्य को प्राप्त करने में मदद मिल सके। साथ ही कर्मचारियों के लंबित मुद्दो पर अपनी बात रखते हुए कहा की आज भेल की टाउनशिप पूरी तरह जर्जर हो रही आज जरूरत है की एक सर्व सुविधा युक्त मल्टी स्टोरी बनाई जाए जिसमे कर्मचारी एक जगह सुरक्षित माहौल में रहे। एवं सारी सुविधा प्राप्त कर सके।

कस्तूरबा हॉस्पिटल में रेनोवेशन का कार्य तो हो गया लेकिन असली रेनोवेशन तब होगा जब नए अच्छे डॉक्टर, नर्स, पैरामेडिकल स्टाफ की भर्ती होगी। पीएमआर जैसी कर्मचारी विरोधी स्कीम को भेल से खत्म किया जाए। Eps 95 हायर पेंशन भेल हैदराबाद की तर्ज पर भेल भोपाल में चालू किया जाए। कर्मचारी के निधन के बाद उनके बच्चो को वयस्क होने तक उन्हें मेडिकल सुविधा दी जाए। भेल कर्मचारी भर्ती में अनुकंपा नियुक्ति पूर्व की भाती दिया जाए जिससे दिवंगत कर्मचारी के परिवार को भेल में रोजगार मिल सके। अनुकंपा अभ्यर्थी को कटऑफ सिस्टम से बाहर रखा जाए।

भेल भोपाल में यह सुनिश्चित किया जाए की अप्रेंटिस में भेल के कर्मचारियों के बच्चो को 100% सलेक्सन हो।

अंत में यूनियन अध्यक्ष राजेश शुक्ला ने का की भेल भोपाल के 2026/27 के टारगेट को सफलता पूर्वक प्राप्त करने के लिए हेम्टू इंटक का पूरा सहयोग रहेगा।

मीटिंग में मुख्य रूप से

राजेश शुक्ला अध्यक्ष,अजीत कुमार गोंड महामंत्री,सी आर नामदेव मीडिया प्रभारी, रामा लिंगम,फजल खान,प्रदीप मालवीय,सतेंद्र शर्मा,नीरज विश्वकर्मा, सी एम साहू,सुरेश मेहरा,ललित रायचंदानी,अजय राठिया,अमलेश बोरासी,अशीष पवार,राहुल भदौरिया, टी आर बटव्य,बुद्धिमान सिन्हा,इंद्रेश तिवारी, कपिल पुरोहित,रहीश चौरसिया,शिवेंद्र मिश्रा,संतोष मीना,रामभुवन विश्वकर्मा,रंजीत रजक,गजानंद देशमुख,पवन कछावा,कमलेश चौरसिया,मदन मोहन पांडे,मंजीत सिंह,प्रदीप मेहरा,प्रमोद पटले,राजदीप,राकेश विश्वकर्मा,रामसिंह राठौर,रामजीत,मनोज राय,रामलाल मेहरा,संजय मीना,सुभाष पवार,दया ग्वाले,सुरेंद्र मकवाना,उमेश ठाकुर,विजय नीलकंठ,दीपक तिवारी,तरुण तिवारी,वीरेंद्र रायकवार,इकबाल खान,दीपक अरगड़े,अमित मालवीय,अनिमेष लाल,उमेश नामदेव,धर्मेंद्र कुशवाहा,सुमेरा परस्ते,जितेंद्र मरावी,अरविंद जैसवाल,जितेंद्र त्रिपाठी,बुलू मिंज,सत्यव्रत मिश्रा, आदि उपस्थित रहे।

जैन समाज की महिलाओं ने भारतीय परिधान के साथ दिया भारतीय संस्कृति का संदेश

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

भोपाल जैन समाज की महिलाओं ने भारतीय परिधान के साथ अपनी संस्कृति और संस्कारों के साथ जीवन की खुशियों एक दूसरे से बाटी बहु मंडल चौक की सभी महिलाओं ने पहले चौक मंदिर में नवकार मंत्र का पाठ किया, ओर देश की एकता अखंडता के लिए विशेष प्रार्थना की , इस अवसर पर बहु मंडल चौक की महिला सदस्यों द्वारा भजन भी गाये इस अवसर पर अध्यक्ष श्रीमती नीलू जैन कोषाध्यक्ष श्रीमती कविता जैन श्रीमती मंजू जैन उपाध्यक्ष श्रीमती निकिता जैन मंत्री श्रीमती आरती जैन मंत्री श्रीमती ज्योति जैन सांस्कृतिक मंत्री श्रीमती आवृत्ति जैन सांस्कृतिक मंत्री श्रीमती प्रियंका जैन के साथ सदस्य भावना जैन सोना जैन ममता जैन डिंपल जैन पूजा जैन प्रीति जैन संगीता जैन रीना जैन रानी जैन ज्योति जैन मनीष जैन विनीता जैन पायल जैन माही जैन सिल्की जैन मेघा जैन प्रियंका जैन पायल जैन अलका जैन कओपल जैन भावना जैन निकिता जैन दीपिका जैन पूजा जैन नेहा जैन अनिका जैन नेहा जैन अपेक्षा जैन ऋतु जैन अंजना जैन जयति जैन आदि मौजूद थीं।

24 दिन में पाकिस्तान-अफगानिस्तान को गिद्ध ने किया पार, जीपीएस से हुई निगरानी

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

मध्य प्रदेश के भोपाल से उड़ा एक गिद्ध 24 दिन में उज्बेकिस्तान पहुंच गया। गिद्ध ने पाकिस्तान और अफगानिस्तान को पार कर करीब 3 हजार किलोमीटर की दूरी तय की। वन विभाग ने जीपीएस से उसकी निगरानी की। वन विहार के मुताबिक, सिनेरियस गिद्ध का रेस्क्यू 19 दिसंबर 2025 को विदिशा जिले के सिरोंज क्षेत्र से किया था। घायल और कमजोर अवस्था में मिले इस दुर्लभ गिद्ध का उपचार वन विहार नेशनल पार्क में हुआ। वल्चर कंजर्वेशन ब्रीडिंग सेंटर (VCBC) केरवा में विशेषज्ञों ने गिद्ध का इलाज किया।

स्वस्थ होने के बाद इसी साल 23 फरवरी को मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने इसे रायसेन जिले के हलाली डैम स्थित प्राकृतिक आवास में मुक्त किया था। मुक्त किए जाने के बाद यह गिद्ध लगभग एक माह तक हलाली डैम क्षेत्र में ही रहा और प्राकृतिक वातावरण में स्वयं को पुनः अनुकूलित करता रहा।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने हलाली डैम से गिद्ध को प्राकृतिक आवास में छोड़ा था। WWF India एवं BNHS के सहयोग से वन विहार ने इस गिद्ध की GPS ट्रेकिंग शुरू की। जिसके जरिए इसकी गतिविधियों एवं प्रवास की वैज्ञानिक निगरानी की जा रही है। ट्रेकिंग से मिली जानकारी के अनुसार, इस गिद्ध ने 10 अप्रैल को हलाली डैम से अपनी लंबी अंतरराष्ट्रीय यात्रा प्रारंभ की। राजस्थान से होते हुए यह पाकिस्तान एवं अफगानिस्तान की सीमा पार कर 4 मई को उज्बेकिस्तान पहुंच गया। इस दौरान इसने 3000 किलोमीटर से अधिक की दूरी तय की।

व्यंग्य भोजपाल की विशेष व्यंग्य गोष्ठी का आयोजन आज

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

हास्य व्यंग्य के लिए समर्पित भोजपाल साहित्य संस्था द्वारा आज दिनांक 10 मई 2026, रविवार को विशेष हास्य व्यंग्य गोष्ठी का आयोजन 9 एम मसाला रेस्तरां में अपरान्ह 04:30 बजे से किया जा रहा है, जिसमें व्यंग्यकार बंधु गद्य एवं पद्य दोनों विधाओं में व्यंग्य रचनाओं का पाठ करेंगे व्यंग्यकार एवं व्यंग्य प्रेमी बंधुओं की उपस्थिति सादर अपेक्षित है।

कांग्रेस के सीनियर नेता ने खोली पार्टी की अंदरूनी कलह की पोल, डॉ. केसवानी बोले- कांग्रेस कई कबीलों में बंटी हुई है

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

मध्य प्रदेश की राजनीति में कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और पूर्व नेता प्रतिपक्ष अजय सिंह का बयान चर्चा का बड़ा मुद्दा बन गया है। उन्होंने मंच से अपनी ही पार्टी की कार्यशैली, टिकट वितरण और नेताओं के बीच बढ़ते मनमुटाव पर खुलकर सवाल उठाए। अजय सिंह के बयान के बाद बीजेपी को कांग्रेस पर हमला बोलने का मौका मिल गया। बीजेपी ने इसे कांग्रेस की "स्थायी गुटबाजी" का खुला प्रमाण बताया है।

टिकट की राजनीति पर अजय सिंह की नाराजगी = अजय सिंह ने पार्टी नेताओं को संबोधित करते हुए कहा कि कांग्रेस में सबसे बड़ी दिक्कत नेताओं की "महत्वाकांक्षा बढ़ाने" की है। उन्होंने कहा कि चुनाव आते ही कई लोगों को टिकट का भरोसा दिया जाता है। उनके मुताबिक, हर विधानसभा सीट पर चुनाव से पहले दर्जनभर दावेदार खड़े हो जाते हैं। लेकिन अंत में टिकट सिर्फ एक व्यक्ति को मिलता है, जिसके बाद बाकी नेता नाराज होकर भीतर ही भीतर विरोध शुरू कर देते हैं। उन्होंने मंच से साफ शब्दों में कहा कि नेताओं को किसी की महत्वाकांक्षा बेवजह नहीं बढ़ानी चाहिए। यही बाद में संगठन के भीतर संघर्ष की वजह बनती है।

अपने ही कार्यकर्ताओं को नहीं समझा पाते- अजय सिंह ने कांग्रेस संगठन की अंदरूनी स्थिति पर भी चिंता जताई। उन्होंने कहा कि पार्टी अपने ही कार्यकर्ताओं और सहयोगियों के बीच पैदा हो रहे मनमुटाव को समय रहते खत्म नहीं कर पाती। उन्होंने कहा कि नीचे काम करने वाले लोगों के बीच जब विवाद बढ़ता है तो वही आगे चलकर बड़ी राजनीतिक समस्या बन जाता है। अजय सिंह के इस बयान को कांग्रेस के अंदर बढ़ती खींचतान से जोड़कर देखा जा रहा है।

BJP ने कहा- कांग्रेस कई गुटों में बंटी- अजय सिंह के बयान के बाद बीजेपी ने कांग्रेस पर जोरदार हमला बोला। मध्य प्रदेश बीजेपी के प्रदेश प्रवक्ता डॉ. दुर्गेश केसवानी ने कहा कि कांग्रेस के वरिष्ठ नेता ने खुद मान लिया है कि पार्टी अंदरूनी संघर्ष से जूझ रही है। केसवानी ने तंज कसते हुए कहा कि कांग्रेस नेताओं के बीच तालमेल नहीं है। उन्होंने दावा किया कि जीतू पटवारी, दिग्विजय सिंह, कमलनाथ, अजय सिंह राहुल, अरुण यादव और कांतिलाल भूरिया अलग-अलग गुटों में बंटे हुए हैं। बीजेपी प्रवक्ता ने कहा कि उनकी पार्टी पहले से कहती आ रही थी कि कांग्रेस कई "कबीलों" में बंटी हुई है और अब अजय सिंह के बयान ने इस बात पर मुहर लगा दी है।

कांग्रेस में बढ़ेगी सियासी हलचल- अजय सिंह का यह बयान ऐसे समय आया है जब मध्य प्रदेश कांग्रेस संगठन को मजबूत करने की कोशिशों में जुटी हुई है। पार्टी लगातार चुनावी रणनीति और संगठन विस्तार पर काम कर रही है। लेकिन वरिष्ठ नेता के सार्वजनिक मंच से दिए गए बयान ने यह संकेत जरूर दे दिया है कि कांग्रेस के भीतर सबकुछ सामान्य नहीं है। अब देखना होगा कि पार्टी नेतृत्व इस बयान को किस तरह संभालता है और क्या अंदरूनी विवादों को शांत कर पाता है।

विकल्प अल्पमत सरकार का...

क्या तमिलनाडु में राष्ट्रपति शासन लागू करने की जरूरत पड़ेगी? यह अपेक्षित स्थिति नहीं होगी। विधानसभा चुनाव में टीवीके भले बहुमत की संख्या से पीछे रह गई हो, लेकिन निर्विवाद रूप से उसकी राजनीतिक विजय हुई है। तमिलगा वेट्री गड़गम (टीवीके) के नेता विजय से बहुमत लायक संख्या दिखाने की मांग कर राज्यपाल राजेंद्र अर्लेकर ने के.आर. नारायणन परिपाटी का पालन किया है। राजनीतिक अस्थिरता के उस दौर में तत्कालीन राष्ट्रपति नारायणन ने सरकार बनाने का आमंत्रण देने के पहले बहुमत के बारे में आश्वस्त होने की परंपरा तय की थी। उसके पहले सबसे बड़े दल के नेता को आमंत्रित करने की रवायत थी। तमिलनाडु विधानसभा चुनाव में टीवीके को 108 सीटें मिलीं, लेकिन विजय दो जगह से जीते हैं, अतः उन्हें एक सीट छोड़नी होगी। एक विधायक स्पीकर चुना जाएगा। स्पीकर सामान्य विधायी कार्यवाही में मतदान नहीं करते। इस तरह टीवीके के 106 विधायक बचते हैं। यानी कांग्रेस के पांच सदस्यों का समर्थन मिलने के बाद भी बहुमत की संख्या तक पहुंचने के लिए उसे सात और विधायक जुटाने होंगे। यह असंभव नहीं है, लेकिन फिलहाल ये संख्या टीवीके के पास नहीं है। डीएमके ने इस चर्चा पर विराम लगा दिया है कि एडीएमके के साथ मिलकर वह सरकार बनाने की किसी कोशिश में शामिल होगी। इस सूरत में ये सवाल है कि तमिलनाडु में सरकार गठन को कब तक टाला जा सकता है? क्या वहां राष्ट्रपति शासन लागू करने की जरूरत पड़ेगी? यह अपेक्षित स्थिति नहीं होगी। विधानसभा चुनाव में टीवीके भले बहुमत की संख्या से पीछे रह गई हो, लेकिन निर्विवाद रूप से उसकी राजनीतिक विजय हुई है। ऐसे में उचित होगा कि उसे सरकार बनाने का मौका मिले। यह अच्छी बात है कि डीएमके प्रमुख एम.के. स्टालिन ने विजय को मौका देने के पक्ष में राय जताई है। अब उनकी पार्टी को चाहिए कि वह राज्यपाल को सूचित करे कि वह एक निश्चित अवधि तक सरकार गिराने के किसी प्रयास का हिस्सा नहीं बनेगी। ऐसा आश्वासन एडीएमके और अन्य दल भी दे सकते हैं। इससे सरकार की स्थिरता संबंधी राज्यपाल की चिंता का समाधान हो जाएगा। साथ ही जनादेश का सम्मान करने की एक स्वस्थ परंपरा कायम होगी। उधर विजय को यह दिखाने का मौका मिलेगा कि उनके लोक-लुभावन वादे महज चुनावी हथकंडा नहीं थे, जिनसे लगभग 35 प्रतिशत मतदाता उनकी ओर आकर्षित हो गए!

डीएमके को धोखा...

इस सवाल पर तमिलनाडु से ज्यादा चर्चा दिल्ली में हो रही है। विपक्षी गठबंधन 'इंडिया' ब्लॉक की पार्टियों में इस पर चर्चा हो रही है और बयानबाजी भी हो रही है। कुछ पार्टियां चुप्पी साधे हुए हैं तो कुछ खुल कर बोल रही हैं। चेन्नई में डीएमके की ओर से एक नेता ने कहा कि कांग्रेस ने पीठ में छुरा भोंका है। हालांकि कांग्रेस इसे नहीं मान रही है। कांग्रेस ने दिल्ली में कहा कि 2014 तक लगातार दस ,साल डीएमके केंद्र में कांग्रेस की सरकार में शामिल रही। लेकिन 2014 के लोकसभा चुनाव से पहले ऐलान कर दिया कि वह लोकसभा का चुनाव अकेले लड़ेगी। लेकिन कांग्रेस ने इसे पीठ में छुरा भोंकना नहीं माना। इसी तरह अगर कांग्रेस कह रही है कि अगला लोकसभा चुनाव वह डीएमके से अलग होकर लड़ेगी तो इसमें कुछ भी गलत नहीं है। जहां तक अभी डीएमके से अलग होकर टीवीके को समर्थन देने का सवाल है तो कांग्रेस का कहना है कि डीएमके को इससे कोई नुकसान नहीं होगा। वैसे भी डीएमके सरकार नहीं बनाने जा रही है। अगर कांग्रेस के समर्थन से उसकी सरकार बन रही होती और तब कांग्रेस उसका साथ छोड़ती तो उसे धोखा देना कहा जाता। अभी तो आधे रास्ते में खड़ी है। इसके साथ ही कांग्रेस का यह भी कहना है कि चुनाव से पहले ही पार्टी ने साफ कर दिया था कि वह बहुत दिल से डीएमके के साथ नहीं है। प्रदेश कांग्रेस के नेता खास कर सांसद मणिक्कम टैगोर हर हाल में विजय से तालमेल की जिद कर रहे थे। लेकिन मल्लिकार्जुन खड़गे ने पुराने संबंधों और पुराने गठबंधन का हवाला देकर डीएमसे से तालमेल कराया। अगर उस समय कांग्रेस और टीवीके मिल कर लड़ते तो कांग्रेस राज्य की दूसरी सबसे बड़ी पार्टी बन सकती थी। इसलिए भले 'इंडिया' ब्लॉक की पार्टियां नाराज हों लेकिन कांग्रेस पर कोई फर्क नहीं पड़ता है।

क्या कर देंगे घुसपैठियों से मुक्त बंगाल?

तो बंगाल भगवा की सुनामी में है इसलिए उम्मीद करनी चाहिए कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृह मंत्री अमित शाह घुसपैठियों से पश्चिम बंगाल को मुक्त कर देंगे? 'मलेच्छ' राज्य से बाहर निकाल दिए जाएंगे, बांग्लादेश की तरफ से घुसपैठ बंद हो जाएगी। बंगाल में हिंदुओं का राजनीतिक व सांस्कृतिक वर्चस्व स्थापित होगा, मुसलमानों की गुंडागर्दी खत्म होगी! भाजपा नेताओं की मानें तो यह सब कुछ होगा। इन्हीं मुद्दों पर भाजपा ने बंगाल का चुनाव लड़ा था। बंगाल में गरीबी है, औद्योगिक विकास ठप्प हो गया है, पलायन हो रहा है, प्रति व्यक्ति आय कम होती जा रही है, नौकरी कम है ये सब ऐसे मुद्दे हैं, जिन पर चुनाव लड़ा जा सकता था।

लेकिन भाजपा ने चुनाव इस वायदे में लडा कि बंगाल का हिंदू गौरव बहाल करेंगे। यह प्रचारित किया गया कि बंगाल में हिंदू सुरक्षित नहीं हैं। उनकी महिलाएं तो बिल्कुल ही सुरक्षित नहीं हैं। यह प्रचारित किया गया कि मुसलमानों की गुंडागर्दी के आगे हिंदुओं की नहीं चलती है। कह सकते हैं कि यह प्रचार कई बरसों से चल रहा था, जिसका नतीजा अब जाकर निकला है। ममता बनर्जी भी 1990 के दशक से लेफ्ट् के खिलाफ ऐसे ही मुद्दों पर लड़ती थीं। उनके सामने भी लेफ्ट की गुंडागर्दी से मुकाबले की चुनौती थी। पार्टी बनाने के बाद ममता ने अपना दूसरा चुनाव 2006 में भाजपा के साथ मिल कर लड़ा था। तब उनका और भाजपा का एक ही एजेंडा था। बंगाल को लेफ्ट की गुंडागर्दी से मुक्ति दिलाना। उस समय तो कामयाबी नहीं मिली लेकिन पांच साल के बाद ममता कामयाब हो गईं। उन्होंने लेफ्ट की गुंडागर्दी समाप्त की लेकिन उसके बाद तृणमूल कांग्रेस की गुंडागर्दी शुरू हो गई। सब कुछ वैसे ही चलता रहा। य़हां तक कि कई जगह तो चेहरे भी नहीं बदले। जो चेहरे लेफ्ट के शासन में घुसपैठ और गुंडागर्दी का पर्याय थे वे ममता बनर्जी के शासन में भी बने रहे।

पिछले कुछ समय से ऐसे अनेक लोग अब भारतीय जनता पार्टी के चेहरे हैं। तभी अब जब ममता बनर्जी की पार्टी की गुंडागर्दी से परेशान होकर लोगों ने भाजपा को जिताया है तब भी यह आशंका है कि चेहरे बदलेंगे या पहले जैसा ही सब कुछ चलता रहेगा? यह भी सवाल है कि पश्चिम बंगाल को क्या भारतीय जनता पार्टी घुसपैठ से मुक्ति दिला देगी? क्या सीमा पार से होने वाली घुसपैठ पूरी तरह से बंद हो जाएगी? क्या सीमा के आरपार चलने वाली इंसानों व मवेशियों की तस्करी बंद हो जाएगी? क्या राज्य की 27 फीसदी से ज्यादा मुस्लिम आबादी को भाजपा की सरकार इस तरह से पालतू बना देगी, जिससे हिंदुओं का वर्चस्व स्थापित हो जाए?

ध्यान रहे बंगाल का इतिहास विभाजन का रहा है और इतिहास से सबक नहीं लेने वाले इतिहास के कूड़ेदान में जाते हैं। अंग्रेजों ने धर्म के आधार पर 1905 में बंगाल का विभाजन किया था। उस विभाजन के खिलाफ बंगाल में बहुत बड़ा आंदोलन खड़ा हुआ। 'वंदे मातरम्' उस आंदोलन का राष्ट्रीय नारा था। बंकिमचंद्र चटोपाध्याय ने 'वंदे मातरम' को संन्यासी विद्रोह पर आधारित अपने उपन्यास 'आनंदमठ' में शामिल किया था लेकिन उसके दो दशक बाद वह बंगाल विभाजन के विरोध का गीत बना। क्या भाजपा के नेता इसके महत्व को समझते हैं या 'वंदे मातरम' को राष्ट्र गान जैसा महत्व देने का प्रशासनिक फैसला करके समझ लिया कि बहुत बड़ा काम हो गया! यह भी याद रखने की जरुरत है कि धर्म के आधार पर विभाजन को हिंदू और मुस्लिम दोनों ने खारिज किया था और दोनों तब मिल कर लड़े थे। समकालीन इतिहास में भी यह अनोखा मामला है कि आजादी के समय जब विभाजन हो गया और पूर्वी बंगाल को पाकिस्तान में मिला दिया गया तो ज्यादा बड़ी आबादी पूर्वी बंगाल के बांग्ला बोलने वालों की थी लेकिन शासन पंजाबी बोलने वाले मुसलमानों के हाथ में थे। यह मामला अनोखा इसलिए है क्योंकि पहली बार ऐसा हुआ कि बहुसंख्यक आबादी ने अल्पसंख्यक आबादी से यानी बांग्ला भाषी हिंदू और मुसलमानों ने पंजाबी हिंदू और मुसलमानों से अलग होने की मांग की। उसकी लड़ाई लड़ी और अंत में बांग्लादेश का गठन हुआ। सो, धर्म से ऊपर नस्ल और भाषा, संस्कृति की पहचान भी बहुत मजबूत रही है। बहरहाल, घुसपैठिया और मुसलमान दोनों भारतीय जनता पार्टी के लिए चुनाव का मुद्दा रहे हैं। पूर्वी राज्यों और पूर्वोत्तर के सीमावर्ती राज्यों को छोड़िए, राजधानी दिल्ली और उससे सटे हरियाणा व उत्तर प्रदेश के एनसीआर के इलाकों में भी भाजपा घुसपैठियों को नाम पर वोट मांगती है। लेकिन सरकार में आने के बाद घुसपैठियों की पहचान करने और उन्हें देश से निकालने के मामले में उसका ट्रैक रिकॉर्ड बहुत खराब है। असम में पिछले 10 साल से डबल इंजन की सरकार है। यानी केंद्र और राज्य दोनों जगह भाजपा की सरकार है। इसके बावजूद न तो असम के घुसपैठियों की पहचान की गई है और न उनको निकाला गया है। मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा हिंदुओं को प्रेरित कर रहे थे कि मियां मुसलमान को प्रताड़ित करो। उसके रिक्शे पर बैठो और अगर वह पांच रुपए मांगे तो उसे चार रुपए दो। सोचें, सरकार अपनी जिम्मेदारी निभाने की बजाय हिंदुओं को क्रूरता करना सीखा रही है! एक तरफ वसुधैव कुटुम्बकम और सर्वधर्म समभाव और दूसरी ओर यह क्रूरता कि रिक्शेवाला पांच रुपए मांगे तो चार रुपए दो। तभी असम और पश्चिम बंगाल को लेकर संदेह ही है।

दिखावे के लिए हो सकता है कि भाजपा की सरकार बनते ही सीमा पर बचे हुए इलाकों में बाड़ लगाने के लिए जमीन देने का फैसला हो जाए और बाड़ लग भी जाए। लेकिन बाड़ लगाना घुसपैठ रोकने का रामबाण तरीका नहीं है। आखिर बांग्लादेश से लगती चार हजार किलोमीटर की सीमा में पश्चिम बंगाल में 22 सौ किलोमीटर की सीमा है, जिसमें से डेढ़ हजार किलोमीटर में बाड़ लगा दी गई है। फिर भी घुसपैठ नहीं रूकी है। केंद्र में 12 साल से भाजपा की सरकार होने के बावजूद न घुसपैठ रूकी है और घुसपैठ का रोना बंद हुआ है। इसी तरह क्या भारतीय जनता पार्टी पश्चिम बंगाल में सरकार बना कर घुसपैठ के मुद्दे को भूल जाएगी? यह मुद्दा रहेगा तभी तो देश भर में इस मुद्दे पर चुनाव लड़ा जाएगा। घुसपैठ के अलावा प्रचार के अन्य मुद्दों में तृणमूल कांग्रेस की गुंडागर्दी, पाड़ा क्लब के जरिए समानांतर सरकार चलाने की व्यवस्था, टोलाबाजी और कटमनी वसूलना आदि शामिल है। भाजपा की सरकार इस पर भी रोक लगा देगी इसमें संदेह है। पश्चिम बंगाल में राजनीति का पूरी व्यवस्था इसी पर टिकी हुई है। जो सरकार में आता है वह इस व्यवस्था को अपना लेता है। बंगाल में चुनाव के दौरान मुस्लिम विरोध की भावना को भड़काने के लिए दो चार कहानियां एक समान रूप से सुनाई जाती थीं। दिल्ली में भी वह कहानी सुनाई गई।

इसमें एक कहानी तो यह है कि अगर पुलिस दो लोगों को ट्रैफिक रूल तोड़ने के मामले में रोकती है तो हिंदू को चालान करेगी और मुस्लिम को जाने देगी। इसी में यह भी कहा जाता था कि जाली वाली टोपी ही हेलमेट का काम करती है। दूसरी कहानी यह है कि कोलकाता के समृद्ध इलाकों में भी मुसलमानों ने फुटपाथ पर कब्जा कर लिया है अच्छी व बड़ी दुकानों के सामने अपना खोखा लगा लिया है। इस तरह का प्रचार दिल्ली में किया जाता था। लेकिन दिल्ली की पुलिस तो 12 साल से भाजपा की केंद्र सरकार के अधीन है फिर भी कुछ नहीं बदला। न तो जाली वाली टोपी में कमी आई और न सड़क पर लगे खोखे कम हुए। सो, यह मानना बहुत मुश्किल है कि भाजपा ने बंगाल में जिन मुद्दों पर चुनाव लड़ कर बहुमत हासिल किया है उन मुद्दों का कोई समाधान उसके पास है। वह एक के बाद एक राज्य तो जीतती जा रही है लेकिन उसे पता ही नहीं है कि इसका क्या करना है। हर जगह सरकार बनाने को ही भाजपा ने अपनी उपलब्धि बना लिया है। ऐसा लग रह है कि भाजपा जब तक केंद्र के साथ साथ हर राज्य में सरकार नहीं बन जाती है तब तक भाजपा अपना कोई काम नहीं करेगी! -हरिशंकर व्यास

साझा विपक्ष बनाने की कोशिश...

पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव के नतीजों को कई तरह से पढ़ा जा रहा है। बंगाल से लेकर देश की राजनीति पर उसके असर और भाजपा व विपक्ष की राजनीति पर उसके प्रभाव का आकलन किया जा रहा है। क्षेत्रीय दलों का प्रभुत्व धीरे धीरे कैसे खत्म हो रहा है यह भी रेखांकित किया जा रहा है। लेकिन इस बार पांच राज्यों में हुए विधानसभा चुनाव के नतीजों का एक आकलन इस लिहाज से भी किया जाना चाहिए कि अब भाजपा के खिलाफ साझा मोर्चा बनाने की पहल कौन करेगा? पिछले दो से तीन साल में ऐसे तमाम नेताओं की विदाई हो गई है, जो भाजपा के खिलाफ विपक्षी पार्टियों का एक साझा मोर्चा बनाने की पहल करते रहे हैं। नीतीश कुमार से लेकर ममता बनर्जी और एमके स्टालिन से लेकर चंद्रशेखर राव, शरद पवार और अरविंद केजरीवाल तक कोई ऐसी स्थिति में नहीं दिख रहा है, जो विपक्ष को एकजुट कर सके। साझा विपक्ष बनाने की कोशिश करने वालों में से इस बार के चुनाव में दो चेहरों और एक विचारधारा आधारित पार्टी की विदाई हो गई है। अगर चेहरों को बात करें तो ममता बनर्जी और एमके स्टालिन ऐसे नेता हैं, जो विपक्ष को एकजुट कर सकते हैं। ममता बनर्जी ने पिछले लोकसभा चुनाव से पहले इसका प्रयास भी किया था। माना जा रहा था कि अगर इस बार वे चौथी बार पश्चिम बंगाल का चुनाव जीतती हैं तो वे विपक्ष की सबसे बड़ी ताकत के तौर पर केंद्रीय राजनीति में स्थापित होंगी। उनके इर्द गिर्द विपक्षी पार्टियां एकजुट होने भी लगी थीं। उनके लिए प्रचार करने विपक्ष के सारे नेता गए थे। अखिलेश यादव से लेकर तेजस्वी यादव और अरविंद केजरीवाल से लेकर हेमंत सोरेन तक सबने ममता की मदद की। अब उनकी पार्टी चुनाव हार कर सत्ता से बाहर हो गई है और अगले लोकसभा चुनाव तक उनकी उम्र 75 साल होगी। वे विपक्ष को एकजुट कर पाएंगी इसमें संदेह है। तमिलनाडु में एमके स्टालिन के नेतृत्व वाले डीएमके का हारना सबसे अप्रत्याशित था। चुनाव बाद के हर एक्जिट पोल में उनकी जीत बताई जा रही थी। लेकिन उनकी पार्टी बहुत बुरी तरह से हारी। डीएमके को सिर्फ 59 सीटें मिलीं। तमिलनाडु में विजय के रूप में एक नई ताकत का उदय हुआ है और स्टालिन के लिए मुश्किल बात यह है कि नतीजों के तुरंत बाद कांग्रेस ने साथ छोड़ दिया। कांग्रेस विजय को समर्थन दे रही है। सोचें, स्टालिन ने राहुल गांधी को प्रधानमंत्री बनाने का संकल्प जताया था। लेकिन कांग्रेस ने पहला मौका मिलते ही डीएमके का साथ छोड़ दिया।

केरल में पिनरायी विजयन के नेतृत्व में सीपीएम की बड़ी हार हुई है। 10 साल सत्ता में रहने के बाद सीपीएम के नेतृत्व वाले लेफ्ट मोर्चे की विदाई हो गई है। इसके साथ ही पिछले पांच दशक में पहली बार ऐसा हुआ है कि किसी भी राज्य में कम्युनिस्ट पार्टियों की सरकार नहीं है। एक समय पश्चिम बंगाल, केरल और त्रिपुरा में लेफ्ट की सरकार होती थी। साथ ही बिहार, झारखंड सहित कई राज्यों में उसके विधायक और सांसद होते थे। अब केरल में कम्युनिस्ट किला ढह गया है। इससे पहले संसद में कम्युनिस्ट नेताओं की संख्या भी ऐतिहासिक रूप से कम हो गई है। अब अगले लोकसभा चुनाव तक राज्यसभा में भी लेफ्ट की मौजूदगी नगण्य हो जाएगी। लेफ्ट के तमाम दिग्गज नेताओं का या तो निधन हो गया है या वे हाशिए में चले गए हैं। विजयन आखिरी बड़े नेता हैं। लेकिन चुनावी हार के बाद उनकी स्थिति भी बहुत कमजोर हो गई है। माणिक सरकार हों या प्रकाश करात या वृंदा करात अब सब हाशिए में हैं। इससे पहले बिहार में सत्ता परिवर्तन हुआ। पहली बार भारतीय जनता पार्टी ने अपना मुख्यमंत्री बनाया। 15 अप्रैल को सम्राट चौधरी ने मुख्यमंत्री पद की शपथ ली थी। उससे पहले नीतीश कुमार मुख्यमंत्री थे। हाल के दिनों में नीतीश एकमात्र नेता थे, जो विपक्षी पार्टियों को एक मंच पर लाने में कामयाब हुए थे। उनसे पहले चंद्रशेखर राव या ममता बनर्जी या अरविंद केजरीवाल को कामयाबी नहीं मिली थी। नीतीश ने अप्रैल 2023 में विपक्षी पार्टियों को एकजुट करना शुरू किया। उनकी पहल पर जून 2023 में पटना के मुख्यमंत्री आवास में विपक्षी पार्टियों की पहली बैठक हुई। इस गठबंधन को बाद में 'इंडिया' ब्लॉक का नाम मिला। हालांकि जनवरी 2024 तक यानी लोकसभा चुनाव नजदीक आने तक नीतीश कुमार खुद ही गठबंधन छोड़ कर चले गए। उसमें कांग्रेस और तृणमूल कांग्रेस सहित कई पार्टियों के नेताओं की भी भूमिका थी। लेकिन अब सेहत और राजनीतिक वजन दोनों लिहाज से नीतीश कुमार की स्थिति ऐसी नहीं है कि वे भाजपा से मुकाबले की राजनीति कर सकें। वे कोई भी वैकल्पिक राजनीति करने की स्थिति में नहीं हैं। विपक्षी नेताओं में चंद्रशेखर राव ने एक समय संघीय मोर्चा बनाने की पहल की थी।

क्षेत्रीय दलों का भी लेफ्ट जैसे हिसाब बराबर!

ताजा चुनाव नें क्षेत्रीय दलों का भविष्य दिखला दिया है। पश्चिम बंगाल में ममता बनर्जी की करारी हार, तमिलनाडु में स्टालिन की फिसलन और केरल में वामपंथ की कमजोर होती पकड़ ने बाकि क्षेत्रीय दलों को भी बैचेन कर दिया होगा। है। सवाल सीधा है, क्या क्षेत्रीय दल 2029 के आते-आते खत्म नहीं हो जाएंगे? क्या यह त्रासदी है या मंडल राजनीति का देर से हो रहा हिसाब बराबर! क्षेत्रीय दलों ने भारत को जोड़ा कम, बांटा ज्यादा। राजनीति को जातियों में और जातियों को वोट बैंक में बदल दिया गया। शासन भी धीरे-धीरे उसी घेरे में सिमटता गया। जो सामाजिक ढांचे टूटने चाहिए थे, उन्हें नए तरीके से खड़ा कर दिया । ऊंच-नीच खत्म नहीं हुई,बल्कि केवल उसका चेहरा बदला।

1990 के दशक का मंडल आंदोलन एक बड़े सामाजिक बदलाव का वादा लेकर आया था। लेकिन बदलाव की जगह केवल सत्ता का स्थानांतरण हुआ। ढांचे जस के तस रहे। पिछड़े वर्गों का एक नया अभिजात्य वर्ग सत्ता में पहुंचा और पहुंचते ही उसने सीढ़ी अपने पीछे खींच ली। आरक्षण, जो सदियों के अन्याय को सुधारने का संवैधानिक औजार था, धीरे-धीरे चुनावी राजनीति का हथियार बन गया। योग्यता केवल पीछे नहीं धकेली गई, उसे संदेह की चीज बना दिया गया। "मेरिट" को विशेषाधिकार का पर्याय बताया गया ताकि जातीय समीकरणों के हिसाब से औसतपन भी संस्थाओं में जगह बना सके।

दलितों और कमजोर वर्गों की रक्षा के लिए बने कानून भी धीरे-धीरे राजनीतिक हथियारों की तरह इस्तेमाल होने लगे। एफआईआरें बदले लेने, विरोधियों को डराने और राजनीतिक शोर खड़ा करने का जरिया बनती गईं। हर गलत इस्तेमाल ने असली पीड़ित की विश्वसनीयता को कमजोर किया। हर राजनीतिक नारेबाजी ने उस सामाजिक हिंसा को हल्का कर दिया जिसे ये कानून रोकने के लिए बने थे। नतीजा समानता नहीं, बल्कि नई तरह की असमानता थी—जाति के भीतर नई जातियां। उधर जातीय नेता मंत्री पद, बंगले और सत्ता की सुविधाएं लेते रहे, जबकि जिन लोगों के नाम पर राजनीति हुई वे वहीं के वहीं रह गए। झुग्गी झोपड़ियों में जिंदगी, मुफ्त योजनाओं पर निर्भरता और हर चुनाव

में वही पुराना वादा नए पैकेट में। धीरे-धीरे राजनीति पर जाति का असर नहीं रहा, जाति ही राजनीति की मुद्रा बन गई।

इस विफलता का परिणाम और भूगोल भी साफ दिखता है। बीमारू (BIMARU) राज्यों में गरीबी केवल आर्थिक स्थिति नहीं रही, वह जातीय सामंतवाद की राजनीतिक परियोजना बन गई। पटना और लखनऊ में दशकों तक जातीय गणित से सरकारें बनती रहीं, लेकिन सीतामढ़ी का किसान और आजमगढ़ का मजदूर वहीं का वहीं रहा। बिहार की प्रति व्यक्ति आय आज भी लगभग 54 हजार रुपये सालाना के आसपास है, जो गोवा की आय का पांचवां हिस्सा भी नहीं। दक्षिण भारत ने यही कहानी थोड़ी बेहतर चमक-दमक के साथ दिखाई। तमिलनाडु के द्रविड़ आंदोलन ने शुरुआती दौर में ब्राह्मण वर्चस्व को चुनौती दी। सामाजिक गतिशीलता बढ़ी, शिक्षा तक पहुंच फैली। लेकिन जो सुधार था, वह धीरे-धीरे परिवारवादी विरासत में बदल गया। डीएमके और एआईएडीएमके ने सामाजिक न्याय की राजनीति को वंशवादी कारोबार बना दिया। करुणानिधि परिवार एक तरफ, जयललिता का संरक्षण तंत्र दूसरी तरफ। विकास हुआ, लेकिन असमानता नीचे बनी रही। समाज बदला, पर पूरी तरह नहीं टूटा। पश्चिम बंगाल शायद सबसे शर्मनाक उदाहरण है। 34 साल के वाम शासन में भारत के संगठित विनिर्माण में बंगाल की हिस्सेदारी लगभग 14 प्रतिशत से घटकर 5 प्रतिशत से भी नीचे चली गई। 1977 से 2011 तक कोई बड़ा निजी औद्योगिक निवेश राज्य में टिक नहीं पाया। भद्रलोक बुद्धिजीवी मार्क्सवाद की बातें करते रहे और जमीन पर सिंडिकेट राज चला। 2008 में टाटा की नैनो परियोजना का विरोध और ट्रेड यूनियन हिंसा उसी पतन का प्रतीक बन गई। बाद में ममता बनर्जी ने लाल झंडों की जगह अपना जनवादी मॉडल खड़ा किया। रंग बदला, ढर्रा और नयापन कुछ नहीं। पूर्वोत्तर और पूर्वी भारत में दूरी ही नियति बन गई। कई क्षेत्रों में राजनीति या तो शोषणकारी रही या पूरी तरह अलग-थलग। वहां अवसर का मतलब अपने राज्य में विकास नहीं, बल्कि दिल्ली या बेंगलुरु की ओर पलायन हुआ। पश्चिम भारत में संपन्नता आई भी तो असमान तरीके से। गुजरात की ऊंची प्रति व्यक्ति आय के साथ आदिवासी और कृषि क्षेत्रों की खाई अब भी बनी हुई है। इन सबके बीच भारत कुल मिलाकर पिछड़ा ही बना रहा। केवल क्षेत्रीय राजनीति के बावजूद नहीं, काफी हद तक उसी के कारण। फिर इसका बौद्धिक बचाव भी खड़ा हुआ। अंग्रेजी मीडिया, सेमिनार संस्कृति और नीति विमर्श ने अल्पसंख्यक अधिकारों और पिछड़ी जातियों की राजनीति का बड़े नैतिक उत्साह से समर्थन किया। लेकिन नतीजा क्या निकला? प्रतिनिधित्व तो मिला, सामाजिक गतिशीलता नहीं। दृश्यता मिली, आर्थिक शक्ति नहीं। बुद्धिजीवियों ने शब्दावली दी, लेकिन गरीबी और अशिक्षा वहीं की वहीं रही। और सबसे बड़ी बात यह कि इस विडंबना पर ध्यान ही नहीं गया। जातीय राजनीति की इस मशीनरी में क्षेत्रीय क्षत्रप दिल्ली की सत्ता में हिस्सेदारी लेते रहे, मंत्रालयों के लिए सौदे करते रहे, और जिन समुदायों के नाम पर राजनीति होती रही वे पीछे छूटते गए। बुद्धिजीवी नैतिक तर्क देते रहे, क्षत्रप राजनीतिक लाभ लेते रहे, और मतदाता को मिला केवल नारा और सब्सिडी। भारत मानव विकास सर्वेक्षण लगातार दिखाता रहा कि जातीय रेखाओं के पार सामाजिक गतिशीलता बेहद सीमित है। मजदूर जाति में जन्मा बेटा बहुत संभावना से उसी दायरे में जीवन पूरा करता है, चाहे कौन-सी पार्टी उसके नाम पर राजनीति करे। पिछले पचास वर्षों में ऐसी राजनीति बनी जो असमानता का वर्णन तो बहुत सटीकता से करती थी, लेकिन उसे तोड़ने का रास्ता नहीं बना सकी। जातीय राजनीति इसलिए असफल नहीं हुई कि उसने पहचान की बात की। वह इसलिए कमजोर पड़ी क्योंकि वह पहचान से आगे बढ़ ही नहीं सकी। उसने नेता पैदा किए, पर्याप्त सीढ़ियां नहीं।

पाकिस्तान को हंगोर क्लास किलर सबमरीन देने के बाद चीनी सेना ने तोड़ी चुप्पी, दोस्ती पर किया बड़ा ऐलान

एजेंसी बीजिंग

पाकिस्तान को हंगोर क्लास पनडुब्बी देने के बाद चीन ने आखिरकार इस पर बयान जारी किया है। चीन के रक्षा मंत्रालय (एमएनडी) की ओर से शनिवार को कहा गया है कि पाकिस्तान को पहली पारंपरिक पनडुब्बी की डिलीवरी की गई है, जिसे हेंगोर क्लास या PNS/M नाम से जाना जाता है। मंत्रालय के प्रवक्ता ने कहा कि यह डिलीवरी दोनों देशों के बीच सैन्य सहयोग दिखाती है। यह चीन-पाकिस्तान की हर मौसम में कायम रहने वाली दोस्ती और रणनीतिक सहकारी साझेदारी का जीता-जागता उदाहरण है। पाकिस्तान नेवी ने 30 अप्रैल को दक्षिण चीन के हैनान प्रांत के सनया शहर में इस पोत के कमीशनिंग समारोह की घोषणा की थी। सान्या बंदरगाह शहर है, जहां पीपुल्स लिबरेशन आर्मी का पनडुब्बी अड्डा है। एमएनडी प्रवक्ता कर्नल जियांग बिन ने कहा कि हाल के वर्षों में दोनों देशों के नेताओं के रणनीतिक नेतृत्व में द्विपक्षीय संबंधों ने नई ऊंचाइयां छुई हैं और इसके शानदार नतीजे सामने आए हैं। कर्नल जियांग बिन ने कहा कि ना सिर्फ दोनों देशों में सहयोग बढ़ा है बल्कि दोनों सेनाओं ने पूरी ईमानदारी के साथ एक-दूसरे का समर्थन किया है। अगले चरण में दोनों सेनाएं रणनीतिक आपसी विश्वास को और मजबूत करेंगी। इससे एक साझा भविष्य वाला घनिष्ठ चीन-पाकिस्तान समुदाय बनाया जा सकेगा। पाकिस्तान ने चीन से 8 पनडुब्बियां खरीदने के लिए सौदा किया है। इस समझौते के तहत चीन ने पाकिस्तान को अप्रैल के आखिर में पनडुब्बियां सौंपनी शुरू की है। पाकिस्तान के राष्ट्रपति आसिफ अली जरदारी ने पिछले महीने बीजिंग की यात्रा की थी। इसी दौरान चीन ने पहली पनडुब्बी सौंपी है। हालांकि चीन की ओर से इस पर बयान करीब 10 दिन बाद आया है।

पाकिस्तान को पनडुब्बी की डिलीवरी दोनों देशों के बीच सैन्य सहयोग दिखाती है। 30 अप्रैल को दक्षिण चीन के हैनान प्रांत के सनया शहर में इस पोत के कमीशनिंग समारोह की घोषणा की गई थी। हाल के वर्षों में दोनों देशों के नेताओं के रणनीतिक नेतृत्व में द्विपक्षीय संबंधों ने नई ऊंचाई छुई है। पाकिस्तानी नेवी ने चीनी उन्नत चीनी पनडुब्बी को शामिल कर लिया है। यह उसकी समुद्री क्षमताओं को मजबूत करने और चीन के साथ रक्षा सहयोग को गहरा करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। डीजल-इलेक्ट्रिक हंगोर श्रेणी की पनडुब्बी चीन की 039A युआन श्रेणी की पनडुब्बियों का निर्यात संस्करण है। चीन की इस पनडुब्बी का विस्थापन तकरीबन 2,800 टन है। इन पनडुब्बियों में उन्नत सेंसर के साथ ही टॉरपीडो और सतह पर मौजूद युद्धपोतों और जमीनी ठिकानों पर हमला करने में सक्षम एंटी-शिप क्रूज मिसाइलों से लैस वायु-स्वतंत्र प्रणोदन (AIP) प्रणाली है। इनको पाकिस्तानी नौसेना की समुद्री युद्ध क्षमता बढ़ाने के उद्देश्य से बनाया गया है। AIP पनडुब्बियां सतह पर आए बिना काफी लंबे समय तक पानी के भीतर रह सकती हैं। साल 2015 में चीन-पाकिस्तान में आठ पनडुब्बियों की डील हुई थी। इस सौदे की अनुमानित कीमत 5 अरब डॉलर है। इसमें चार पनडुब्बियां चीन में बनाई जा रही हैं। इसके बाद चार पनडुब्बियां तकनीक ट्रांसफर समझौते के तहत पाकिस्तान में बनाई जाएंगी। चीन में बनी चारों पनडुब्बियां 2028 तक नौसेना में शामिल हो जाएंगी। पाकिस्तानी राष्ट्रपति जरदारी ने पहली चीनी आक्रमण पनडुब्बी के शामिल होने को अपनी नेवी के आधुनिकीकरण में मील का पत्थर कहा है। पाकिस्तान के नौसेना प्रमुख नवीद अशरफ का दावा है कि अत्याधुनिक हथियारों से लैस हंगोर पनडुब्बियां अरब सागर और हिंद महासागर क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगीं। पाकिस्तान और भारत का टकराव दशकों पुराना है। दोनों ही देश समुद्र में अपनी ताकत बढ़ा रहे हैं। ऐसे में हिंद महासागर एक रणनीतिक क्षेत्र बनता जा रहा है, जहां चीन अपना प्रभाव बढ़ा रहा है। यह एक महत्वपूर्ण वैश्विक समुद्री मार्ग है। पाकिस्तान को इस क्षेत्र में मजबूत करने में चीन से लगातार मदद मिल रही है। पाकिस्तान के सैन्य आधुनिकीकरण में चीन की रक्षा आपूर्ति महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। स्टॉकहोम इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट के अनुसार, चीन ने 2021 और 2025 के बीच पाकिस्तान के हथियार आयात का 80 फीसदी हिस्सा सप्लाई किया है। पाकिस्तान बीजिंग का शीर्ष हथियार ग्राहक है, जो उसके रक्षा निर्यात का 60 प्रतिशत खरीदता है।

US-Iran के बीच New Deal की पेशकश, क्या प्रतिबंधों के बदले परमाणु कार्यक्रम रोकेगा तेहरान

एजेंसी वॉशिंगटन

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने शुक्रवार को कहा कि उन्हें उम्मीद है कि युद्ध समाप्त करने के उद्देश्य से वाशिंगटन द्वारा प्रस्तावित नवीनतम प्रस्ताव पर ईरान से आज रात तक जवाब मिल जाएगा, हालांकि तेहरान ने संकेत दिया कि वह अभी भी प्रस्ताव की समीक्षा कर रहा है और उसने अभी तक अपनी प्रतिक्रिया को अंतिम रूप नहीं दिया है। ट्रंप ने व्हाइट हाउस के बाहर पत्रकारों से कहा कि मुझे आज रात एक पत्र मिलने की उम्मीद है। तो देखते हैं आगे क्या होता है। इससे पहले कि वह स्टर्लिंग, वर्जीनिया में अपने गोल्फ कोर्स के लिए रवाना हों। जब उनसे पूछा गया कि क्या ईरान जानबूझकर प्रक्रिया में देरी कर रहा है, तो ट्रंप ने जवाब दिया हमें जल्द ही पता चल जाएगा। सीएनएन ने ईरानी मीडिया का हवाला देते हुए बताया कि ईरान अभी भी पाकिस्तानी मध्यस्थों के माध्यम से संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा भेजे गए "संदेशों" की समीक्षा कर रहा है और उसने अभी तक प्रस्ताव पर अंतिम निर्णय नहीं लिया है। प्रस्तावित समझौता एक पृष्ठ का 14 सूत्रीय ज्ञापन है जिसका उद्देश्य संघर्ष को रोकना और वाशिंगटन और तेहरान के बीच औपचारिक वार्ता शुरू करना है। इस योजना के तहत, ईरान परमाणु संवर्धन गतिविधियों को रोक सकता है, जबकि संयुक्त राज्य अमेरिका प्रतिबंधों में ढील दे सकता है और अरबों डॉलर की ईरानी संपत्तियों को जारी कर सकता है जो रोकी गई हैं। प्रस्ताव में कथित तौर पर दोनों पक्षों द्वारा होर्मुज जलडमरूमध्य में प्रतिबंधों को कम करने के कदम भी शामिल हैं, जो एक महत्वपूर्ण वैश्विक तेल पारगमन मार्ग है और हाल के सैन्य तनावों का केंद्र बना हुआ है। यह समझौता 30 दिनों की वार्ता अवधि के साथ शुरू होगा जिसका उद्देश्य एक व्यापक दीर्घकालिक समझौते का मार्ग प्रशस्त करना है। होर्मुज जलडमरूमध्य और उसके आसपास जारी सैन्य तनाव के बीच राजनयिक प्रयास किए जा रहे हैं। एक ईरानी सैन्य सूत्र ने चेतावनी दी है कि अगर अमेरिका ने इस क्षेत्र में ईरानी जहाजों के साथ फिर से हस्तक्षेप किया तो झड़पें दोबारा शुरू हो सकती हैं। ईरान की तसनीम समाचार एजेंसी के अनुसार, सूत्र ने मौजूदा स्थिति को "शांत" बताते हुए कहा कि अगर अमेरिकी सेना ईरानी जहाजों को बाधित करने का प्रयास करती है तो "इस तरह के संघर्षों के फिर से शुरू होने की संभावना" बनी हुई है। ईरान की फ़ार्स समाचार एजेंसी ने इससे पहले रणनीतिक जलमार्ग में ईरानी सेना और अमेरिकी नौसेना के जहाजों के बीच "छिटपुट झड़पों" की सूचना दी थी। यह तनाव अमेरिकी केंद्रीय कमान (CENTCOM) के बयानों के बाद बढ़ा, जिसमें कहा गया था कि अमेरिकी सेना ने दो खाली ईरानी ध्वज वाले तेल टैंकरों पर हमला किया, जो कथित तौर पर ओमान की खाड़ी के रास्ते एक ईरानी बंदरगाह में प्रवेश करके चल रही अमेरिकी नाकाबंदी को तोड़ने का प्रयास कर रहे थे।

भारत के चकिन नेक लिए 'ढाल' है चीन से सटा पड़ोसी देश, 600 KM तक करता है रक्षा

एजेंसी थिम्फू

भारत को उसके पूर्वोत्तर राज्यों से जोड़ने वाला सिलीगुड़ी कॉरिडोर (चिकन नेक) रणनीतिक रूप से अहम है। चीन-पाकिस्तान जैसे देश इसे भारत की 'कमजोरी' के तौर पर देखते हैं और इसका फायदा उठाने की कोशिश करते रहे हैं। वहीं भारत के लिए चिकन नेक के पास बड़ी ताकत पड़ोसी देश भूटान है। भूटान के जानेमाने पत्रकार और डिफेंस एक्सपर्ट तेनजिंग लामसांग ने इस पर एक लंबी पोस्ट लिखी है। उन्होंने इस पर नाराजगी भी जताई है कि चिकन नेक के मामले में भारत उस तरह से भूटान के लिए आभार नहीं जताता है, जैसे उसे जताना चाहिए। द भूटानीज के एडिटर तेनजिंग लामसांग कहते हैं कि भारत जब सालाना बजट पेश करता है तो इस पर खूब बात होती है कि दोस्त देश भूटान को कितनी मदद दी गई है। भूटान को सबसे ज्यादा मदद पाने वाले देश के तौर पर दिखाया जाता है लेकिन यह नहीं बताया जाता कि इसके बदले में भारत को क्या मिलता है। हकीकत यह है कि भारत को रणनीतिक और आर्थिक दोनों ही लिहाज से भूटान से बहुत कुछ वापस मिलता है।

लामसांग कहते हैं, 'भूटान की 600 किमी लंबी सीमा भारत की संकरी चिकन नेक (सिलीगुड़ी कॉरिडोर) पर स्थित है, जो सिलीगुड़ी से शुरू होकर असम तक जाती है और भारत को उसके उत्तर-पूर्वी हिस्से से जोड़ती है। एक मित्र देश के तौर पर भूटान इस इलाके में सुरक्षा सुनिश्चित करता है। वह इस इलाके में किसी बाहरी देश के बुरे इरादों वाले दखल को रोकता है। भूटान इस इलाके में उत्तर-पूर्वी राज्यों के उग्रवादी गुटों को भी सक्रिय होने से रोकता है। लामसंग का कहना है कि भूटान को कमजोर समझकर ULFA, NDFB और KLO जैसे उत्तर-पूर्वी राज्यों के उग्रवादी गुटों ने जंगलों में अपने कैंप बना लिए थे। दिसंबर 2003 में चौथे राजा ने खुद अपनी सेना की अगुवाई की, जिसमें 160 उग्रवादी मारे गए और 500 को पकड़ा गया। भूटान भारत को पूर्वोत्तर भारत में रणनीतिक गहराई प्रदान करता है। मित्र देश होने के नाते भूटान विरोधी तत्वों को असम, पश्चिम बंगाल, अरुणाचल प्रदेश, सिक्किम में घुसने के रास्ते हासिल करने से रोकता है। भारत सरकार भूटान को अपनी पूर्वी रक्षा के लिए एक रणनीतिक गहराई के रूप में देखती है। तेनजिंग लामसांग का कहना है कि चीन के साथ सीमा विवाद में भूटान ने बड़े नुकसान उठाए हैं। भारत के लिए अहम सिलीगुड़ी कॉरिडोर की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए भूटान ने पश्चिम में डोकलाम और जोम्पेलरी रिज को चीन को सौंपने से साफ इनकार कर दिया, जबकि चीन ने इसके बदले में मध्य क्षेत्र में दोगुनी जमीन देने की पेशकश की थी। भूटानी एक्सपर्ट का कहना है कि दक्षिण एशिया में भूटान ही एकमात्र ऐसा देश है, जिसने भारत का लिहाज करते हुए चीन के साथ कोई कूटनीतिक संबंध स्थापित नहीं किए हैं। भारत के अलावा भूटान ही एकमात्र ऐसा देश है, जो चीन की 'BRI' (बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव) परियोजना में शामिल नहीं हुआ है और वह चीन के AIIB बैंक का भी हिस्सा नहीं है।

नेपाल को भारत ने दिया 440 वोल्ट का झटका, रद्द किया फॉरिन सेक्रिटेरी दौरा

एजेंसी नई दिल्ली

लिपुलेख वो इलाका है जो भारत का है और नेपाल इसे लेकर उल्टे सीधे दावे करता है और पिछले कुछ दिनों में नेपाल में इस मुद्दे को लेकर राजनीतिक बयानबाजी काफी तेज हो गई। ऐसे में विदेश सचिव का दौरा टलना इन घटनाओं का भी प्रभाव हो सकता है। हालांकि इसकी पुष्टि भारत तक नहीं करता। आपको बता दें भारत और नेपाल के संबंध सिर्फ पड़ोसी देशों वाले नहीं है। दोनों देशों के बीच खुली सीमा है। सांस्कृतिक और धार्मिक जुड़ाव है और आर्थिक सहयोग भी दोनों के बीच काफी बड़ा रोटी बेटी का रिश्ता है। पिछले कुछ दिनों में भारत और नेपाल के रिश्तों में हल्का तनाव देखने को मिला। पहले लिपुलेख को लेकर विवाद जहां दोनों देशों की ओर से बयानबाजी हुई और अब खबर आ रही है कि भारत के विदेश सचिव विक्रम मिश्री का प्रस्तावित नेपाल दौरा फिलहाल टाल दिया गया। बताया जा रहा है कि यह दौरा 11 मई से शुरू होना था। लेकिन अचानक इसे स्थगित कर दिया गया और भारत की ओर से लिए गए इस फैसले को लेकर कई तरह की चर्चाएं भी शुरू हो गई। दरअसल विदेश सचिव विक्रम मिश्री दो दिन के दौरे पर काठमांडू जाने वाले नेपाल और भारत दोनों तरफ से इसकी तैयारियां पूरी कर ली गई थी। लेकिन अब अचानक इस दौरे को टाल दिया गया। नेपाल के विदेश मंत्रालय और काठमांडू स्थित भारतीय दूतावास के अधिकारियों के मुताबिक भारतीय पक्ष की तरफ से अचानक जानकारी ली गई कि यह दौरा फिलहाल टाल दिया गया है। हालांकि आधिकारिक तौर पर कोई कारण नहीं बताया गया। भारतीय विदेश सचिव के इस दौरे को इसलिए भी अहम माना जा रहा है क्योंकि नेपाल में हाल ही में नई सरकार बनी और बालन शाह नेपाल के नए प्रधानमंत्री बने हैं और वह पहली बार भारत के साथ प्रधानमंत्री बनने के बाद उच्च स्तरीय बातचीत करने वाले थे। भारत की योजना थी कि विदेश सचिव विक्रम मिश्री नेपाल जाकर प्रधानमंत्री बालेन शाह को भारत आने का औपचारिक निमंत्रण दें। लेकिन रिपोर्ट्स के मुताबिक नेपाल के प्रधानमंत्री कार्यालय यानी पीएमओ की तरफ से इस बैठक को लेकर कोई स्पष्ट प्रतिक्रिया नहीं मिली और यही वजह बताई जा रही है कि भारत ने दौरा आगे बढ़ाने का फैसला लिया। सूत्रों का कहना है कि अगर प्रधानमंत्री स्तर की मुलाकात ही नहीं हो पाती तो फिर इस दौरे का राजनीतिक महत्व कम हो जाता। हालांकि नेपाल सरकार ने इस मामले को ज्यादा बड़ा मुद्दा मानने से इंकार किया। नेपाल के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता लोक बहादुर पौल क्षेत्री ने कहा कि भारत और नेपाल के रिश्ते बहुत गहरे हैं और किसी एक मुद्दे से दोनों देशों के संबंध प्रभावित नहीं होंगे। हालांकि एक बात और यह पूरा घटनाक्रम ऐसे समय में हुआ है जब लिपुलेख को लेकर भी तनाव बढ़ा हुआ है। नेपाल की सरकार और विपक्ष दोनों ने लिपुलेख को लेकर बयानबाजी तेज कर दी है। आपको बता दें लिपुलेख वो इलाका है जो भारत का है और नेपाल इसे लेकर उल्टे सीधे दावे करता है और पिछले कुछ दिनों में नेपाल में इस मुद्दे को लेकर राजनीतिक बयानबाजी काफी तेज हो गई। ऐसे में विदेश सचिव का दौरा टलना इन घटनाओं का भी प्रभाव हो सकता है। हालांकि इसकी पुष्टि भारत तक नहीं करता। आपको बता दें भारत और नेपाल के संबंध सिर्फ पड़ोसी देशों वाले नहीं है। दोनों देशों के बीच खुली सीमा है। सांस्कृतिक और धार्मिक जुड़ाव है और आर्थिक सहयोग भी दोनों के बीच काफी बड़ा रोटी बेटी का रिश्ता है।

मणिपुर में सेना के डॉग्स और कमांडो का हाई-वोल्टेज ऑपरेशन ड्रिल

एजेंसी नई दिल्ली

मणिपुर के लीमाखोंग मिलिट्री स्टेशन में इंडियन आर्मी की रेड शील्ड डिवीजन ने एक विशेष स्लिथरिंग एक्सरसाइज का आयोजन किया, जिसमें सेना के प्रशिक्षित K9 वॉरियर्स और जवानों ने हिस्सा लिया। इस हाई-इंटेंसिटी अभ्यास के दौरान हेलिकॉप्टर से रस्सियों के जरिए जवानों और आर्मी डॉग्स को जमीन पर उतारा गया। कठिन परिस्थितियों में तेजी से ऑपरेशन को अंजाम देने की क्षमता बढ़ाने के उद्देश्य से यह ट्रेनिंग आयोजित की गई। इस स्पेशल एक्सरसाइज में कुल 5 डॉग टीमों ने हिस्सा लिया। अभ्यास के दौरान हेली-बोर्न इन्सर्शन, ऑपरेशनल कोऑर्डिनेशन और कॉम्बैट रेडीनेस पर खास जोर दिया गया। सेना के जवानों और K9 यूनिट्स ने मिलकर चुनौतीपूर्ण हालात में तालमेल और त्वरित कार्रवाई का प्रदर्शन किया। अधिकारियों के मुताबिक, इस तरह की ट्रेनिंग संवेदनशील इलाकों

में आतंकवाद विरोधी अभियानों के लिए बेहद महत्वपूर्ण मानी जाती है।

आर्मी के डॉग्स आधुनिक सुरक्षा और युद्ध अभियानों का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। ये K9 यूनिट्स विस्फोटक खोजने, संदिग्धों का पता लगाने, सर्च एंड रेस्क्यू मिशन चलाने और आपदा राहत अभियानों में अहम भूमिका निभाते हैं। मणिपुर में आयोजित इस अभ्यास ने दिखाया कि सेना अपने डॉग स्क्वॉड को अब एडवांस एयरबोर्न ऑपरेशन के लिए भी तैयार कर रही है।

रेड शील्ड डिवीजन की ओर से किए गए इस अभ्यास में हेलिकॉप्टर क्रू, कमांडो यूनिट्स और K9 टीमों के बीच शानदार तालमेल देखने को मिला। रक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि भविष्य के काउंटर-टेरर ऑपरेशन और हाई-रिस्क मिशनों में आर्मी डॉग्स की भूमिका और बढ़ने वाली है। इंडियन आर्मी लगातार आधुनिक तकनीक और स्पेशलाइज्ड ट्रेनिंग के जरिए अपनी ऑपरेशनल क्षमता को मजबूत कर रही है।

सऊदी प्रिंस MBS बनाम UAE के MBZ, 2 सुन्नी देशों में वर्चस्व की जंग, शिया ईरान की बल्ले-बल्ले

एजेंसी रियाद

सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) के बीच तनाव की इस समय पूरी दुनिया की नजर है। दोनों देशों में बीते साल यमन में तनातनी शुरू हुई थी, जो ईरान युद्ध शुरू होने के बाद बढ़ गई। इसका चरम हाल ही में देखने को मिला, जब यूएई ने ओपेक से बाहर होने का ऐलान कर दिया। ऐसे में सवाल उठा है कि आखिर दो ताकतवर सुन्नी देशों के प्रमुख, यूएई प्रेसिडेंट शेख मोहम्मद बिन जायद अल-नाहयान (MBZ) और सऊदी क्राउन प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान (MBS) आमने-सामने क्यों हैं। इसका पूरे क्षेत्र पर असर हो रहा है और अमेरिका से युद्ध में उलझे ईरान को भी इसका फायदा मिल सकता है। शिया देश ईरान को निश्चित ही अपने दो विरोधियों में टकराव का फायदा मिलेगा। मिडिल ईस्ट आई ने अपनी रिपोर्ट में यूएई और सऊदी के शाही परिवारों की विचारधारा और विवाद की कहानी बताई है। रिपोर्ट बताती है कि सऊदी अरब ने यूएई के अल-नाहयान परिवार के राजकुमार को 50 के दशक में रिश्वत देने की कोशिश की, ताकि वह एक रेगिस्तानी नखलिस्तान का नियंत्रण छोड़ दे, जहां माना जाता था कि तेल का भंडार है। उसने इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया और सऊदी अरब ने इस इलाके पर कब्जे के लिए हमला किया। दिवंगत पत्रकार डेविड होल्डन ने अपनी 1966 की किताब 'फेयरवेल टू अरेबिया' में 1950 के दशक के 'बुराइमी विवाद' का जिक्र किया, जो सऊदी शाही परिवार, ओमान और ट्रूशियल स्टेट्स (जो बाद में यूएई बना) के बीच हुआ था। जिसे सऊदी अरब ने रिश्वत देने की कोशिश की थी, वह जायद बिन सुल्तान अल-नाहयान थे। उनके बेटे मोहम्मद बिन जायद अब सऊदी के क्राउन प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान के साथ तकरार में उलझे हुए हैं।

अमेरिका के पूर्व राजनयिक और राजदूत पैट्रिक थेरोस ने मिडिल ईस्ट आई से कहा कि अगर विचारधारा, परिवार और इतिहास को एक साथ देखें तो सऊदी अरब और यूएई के बीच की इस तकरार को समझा जा सकता है। सऊदी अरब और यूएई आज कई मोर्चों पर एक-दूसरे के आमने-सामने हैं। MBZ ने आखिरकार तय कर लिया है कि एक छोटे से खाड़ी देश के लिए सउदी और ईरानियों के सामने खड़े होना मुमकिन है। UAE की कोशिश इजरायल के साथ अपनी साझेदारी को और मजबूत कनरे की भी है। राजनयिकों और विश्लेषकों का कहना है कि यूएई-सऊदी के बीच की तकरार काफी हद तक पश्चिम एशिया के भविष्य को तय करेगी। खासकर ऐसे समय में, जब ईरान युद्ध की वजह से इस इलाके में अमेरिका की पकड़ कमजोर पड़ती दिख रही है। इसका असर एशिया, यूरोप और अमेरिका के आम लोगों की जेब पर भी पड़ेगा। यूएई ने सऊदी अरब के नेतृत्व वाले तेल उत्पादक देशों के संगठन OPEC छोड़ दिया है। इस फैसले के बाद वह हर दिन लाखों बैरल ज्यादा तेल का उत्पादन करेगा। विशेषज्ञों का मानना है कि इससे भविष्य में सऊदी अरब के साथ 'कीमतों की जंग' छिड़ने की ज़मीन तैयार हो सकती है। इससे दोनों देशों के बीच दरार और बढ़ेगी। किंग्स कॉलेज लंदन में अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा के विशेषज्ञ रॉब गाइस्ट पिनफोल्ड का कहना है कि सऊदी अरब ओपेक और गल्फ कोऑपरेशन काउंसिल के जरिए अपनी ताकत दिखाना चाहता है। वह खुद को गल्फ का स्वाभाविक नेता मानता है। यूएई छोटा है लेकिन उसे लगता है कि सऊदी अरब के आगे झुकने से वह विश्व मंच पर अपनी ताकत का इस्तेमाल नहीं कर पाएगा।

विदेश मंत्री एस जययशंकर की `क्रिकेट डिप्लोमेसी´, टोबैगो में दिग्गज लारा से हुई खास मुलाकात

एजेंसी नई दिल्ली

विदेश मंत्री एस जयशंकर ने शुक्रवार (स्थानीय समय) को त्रिनिदाद और टोबैगो में वेस्ट इंडीज के दिग्गज क्रिकेटर ब्रायन लारा से मुलाकात की। यह मुलाकात कैरेबियन में उनके तीन देशों के आधिकारिक दौरे के अंतिम चरण के दौरान हुई। उन्होंने X पर पूर्व बल्लेबाज के साथ अपनी तस्वीरें साझा करते हुए लिखा, "एकमात्र ब्रायन लारा के साथ।" लारा को सर्वकालिक महानतम बल्लेबाजों में गिना जाता है और उनकी तुलना सचिन तेंदुलकर, रिकी पोंटिंग और जैक्स कैलिस जैसे दिग्गज खिलाड़ियों से की जाती है। अपने 17 साल के अंतरराष्ट्रीय करियर में उन्होंने 131 टेस्ट मैचों में 52.89 की औसत से 11,953 रन और 299 वनडे मैचों में 10,405 रन बनाए।

विदेश मंत्री जयशंकर ने त्रिनिदाद और टोबैगो की प्रधानमंत्री कमला पर्सद-बिसेसर से भी मुलाकात की और उनके साथ मिलकर त्रिनिदाद और टोबैगो के स्कूली बच्चों को भारत में निर्मित लैपटॉप भेंट किए। इस दौरान दोनों पक्षों ने द्विपक्षीय सहयोग को गहरा करने के उद्देश्य से कई समझौतों पर भी हस्ताक्षर किए। विदेश मंत्री ने पर्यटन, नवीकरणीय ऊर्जा, विकास सहयोग और पारंपरिक चिकित्सा को लेकर भारत और त्रिनिदाद एवं टोबैगो के बीच कई समझौतों के संपन्न होने की घोषणा भी की।

त्रिनिदाद एवं टोबैगो की प्रधानमंत्री से अपनी मुलाकात का जिक्र करते हुए जयशंकर ने कहा कि प्रधानमंत्री कमला पर्सद-बिसेसर से मिलकर बेहद खुशी हुई। द्विपक्षीय सहयोग पर उनके मार्गदर्शन और क्षेत्रीय मुद्दों पर उनकी अंतर्दृष्टि का मैं बहुत आभारी हूं। जयशंकर ने त्रिनिदाद एवं टोबैगो की संसद में मिले स्वागत के लिए आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि त्रिनिदाद एवं टोबैगो की संसद में स्वागत पाकर मैं खुद को सौभाग्यशाली महसूस कर रहा हूं। प्रधानमंत्री कमला पर्सद-बिसेसर के सौहार्दपूर्ण शब्दों के लिए धन्यवाद। त्रिनिदाद और टोबैगो के विदेश और सीएआरआईकॉम मामलों के मंत्रालय द्वारा आयोजित ध्वजारोहण समारोह में मंत्री को सम्मानित किया गया। इस समारोह में उनके साथ वेस्ट इंडीज के दिग्गज क्रिकेटर ब्रायन लारा भी मौजूद थे। जयशंकर ने पोस्ट किया कि त्रिनिदाद और टोबैगो के विदेश और सीएआरआईकॉम मामलों के मंत्रालय में ध्वजारोहण समारोह में शामिल होकर सम्मानित महसूस कर रहा हूं। हमारे साथ शामिल होने के लिए ब्रायन लारा का धन्यवाद। इससे पहले, विदेश मंत्री जमैका और सूरीनाम में अपने कार्यक्रमों के बाद कैरेबियन के तीन देशों के आधिकारिक दौरे के अंतिम चरण के रूप में त्रिनिदाद और टोबैगो पहुंचे।

मिनिस्ट्री के दखल के बाद जागा एआईसीफ, ग्रांडमास्टर अभीजीत को मिलेगा प्राइजमनी

एजेंसी नई दिल्ली

भारतीय ग्रैंडमास्टर अभिजीत गुप्ता ने इस साल की शुरुआत में ओडिशा ओपन शतरंज टूर्नामेंट की खिताबी पुरस्कार राशि नहीं मिलने पर निराशा व्यक्त की और खेल मंत्रालय से इस मामले में हस्तक्षेप करने के बाद उन्हें अखिल भारतीय शतरंज महासंघ (एआईसीएफ) से आश्वासन मिला है कि इस मुद्दे का समाधान किया जाएगा। एआईसीएफ ने कहा कि उनकी पुरस्कार राशि का भुगतान करने के लिए जरूरी कदम उठाए जा रहे हैं।

शतरंज ओलंपियाड के पदक विजेता और पांच बार के राष्ट्रमंडल चैंपियन गुप्ता ने बार-बार एआईसीएफ को इस संबंध में पत्र लिखा लेकिन इसके बावजूद खिताब जीतने के चार महीने बाद भी उन्हें पुरस्कार राशि नहीं मिली। लेकिन एआईसीएफ की तरफ से कोई कार्रवाई नहीं की गई। इस कारण उन्होंने खेल मंत्रालय से हस्तक्षेप की गुहार की। सूत्रों के अनुसार ओडिशा शतरंज संघ में आंतरिक कलह चल रही है और उसका बैंक खाता फ्रीज हो गया है, जिससे आयोजक बकाया राशि का भुगतान नहीं कर पा रहे हैं। गुप्ता ने 'एक्स' पर लिखा, ''मैं खेल मंत्रालय से विनम्र अनुरोध करता हूं कि वह इस मामले पर गौर करे और यह सुनिश्चित करने में मदद करे कि खिलाड़ियों को पारदर्शिता और जवाबदेही के साथ उनकी उचित पुरस्कार राशि मिले।'' उन्होंने कहा, ''यह केवल एक पुरस्कार राशि का मामला नहीं है। यह भारत के प्रत्येक शतरंज खिलाड़ी की गरिमा और विश्वास से जुड़ा मामला भी है।''

अभिजीत ने जनवरी में यह प्रतियोगिता जीती थी और उनका दावा है कि आयोजकों पर उनका 5.5 लाख रुपये का बकाया है। हालांकि बाद में उन्होंने सोशल मीडिया पर पोस्ट किया कि एआईसीएफ के अध्यक्ष नितिन नारंग ने उन्हें आश्वासन दिया है कि इस मामले का निपटारा किया जाएगा। गुप्ता ने लिखा, ''एआईसीएफ के अध्यक्ष नितिन नारंग ने मुझे फोन करके आश्वासन दिया कि जरूरी कदम उठा दिए गए हैं। '' उन्होंने इससे पहले कहा था, ''मैंने इस साल जनवरी में ओडिशा ओपन का खिताब जीता था।

आयोजकों ने मुझे आश्वासन दिया था कि पुरस्कार राशि एक महीने के अंदर भुगतान कर दी जाएगी, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। इसके बाद जब मैंने उनसे इस बारे में पूछताछ की तो उन्होंने जवाब देना बंद कर दिया।''

गुप्ता ने कहा, ''जीत और हार एक खिलाड़ी के सफर का हिस्सा हैं लेकिन दुख तब होता है जब आप जीत जाते हैं और फिर भी आपको वह नहीं मिलता जिसके आप हकदार हैं।''

एआईसीएफ के एक सूत्र ने बताया कि ओडिशा ओपन के आयोजक गुप्ता को भुगतान नहीं कर पा रहे हैं क्योंकि राज्य संघ के भीतर चल रहे आंतरिक कलह के कारण उनका बैंक खाता फ्रीज कर दिया गया था। सूत्र ने बताया, ''राज्य संघ के भीतर आपसी कलह चल रही है, प्रतिद्वंद्वी गुट आपस में विवाद में उलझे हुए हैं, जिसके कारण खाता फ्रीज कर दिया गया है और खिलाड़ियों को उनका बकाया नहीं मिल रहा है।

ग्लोबल बनीं नोरा, अब फीफा में परफॉर्मेंस से मचाएंगी धमाल

एजेंसी नई दिल्ली

नोरा फतेही 12 जून, 2026 को टोरंटो, कनाडा के बीएमओ फील्ड में आयोजित होने वाले फीफा विश्व कप 2026 के उद्घाटन समारोह में प्रस्तुति देंगी और गाएंगी, जो उनके अंतरराष्ट्रीय करियर में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि होगी। उनकी भागीदारी विश्व के सबसे बड़े खेल और मनोरंजन मंचों में से एक पर उनकी बढ़ती उपस्थिति को और मजबूत करती है।

फीफा की एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, नोरा उन वैश्विक कलाकारों में शामिल होंगी जिनमें एलनिस मॉरिसेट, एलेशिया कारा, इलियाना, जेसी रेयेज़, माइकल बुबले, संजॉय, वेजड्रीम और विलियम प्रिंस शामिल हैं।

अमेरिका के उद्घाटन समारोह में अनीता, फ्यूचर, कैटी पेरी, लिसा, रेमा और टाइला जैसे कलाकार प्रस्तुति देंगे, जो अंतरराष्ट्रीय संगीत, संस्कृति और मनोरंजन का एक विविध प्रदर्शन प्रस्तुत करेंगे। फीफा अध्यक्ष जियानी इन्फेंटिनो द्वारा साझा की गई एक पोस्ट में कार्यक्रम के संगीत कार्यक्रमों पर प्रकाश डाला गया।

नोरा फतेही की इस प्रस्तुति से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उनकी बढ़ती लोकप्रियता और विभिन्न संस्कृतियों में उनकी गहरी पकड़ का पता चलता है। 2022 में फीफा विश्व कप समारोह के दौरान उनके शानदार प्रदर्शन के बाद, उनकी वापसी संगीत, नृत्य और मंच पर उनकी बहुमुखी प्रतिभा के कारण एक बहुमुखी कलाकार के रूप में उनकी बढ़ती मांग को रेखांकित करती है। यह अवसर नोरा की गायिका और कलाकार दोनों की दोहरी भूमिका के लिए उल्लेखनीय है, जो एक बहुमुखी वैश्विक मनोरंजनकर्ता के रूप में उनकी पहचान को और मजबूत करता है। अपने पूरे करियर के दौरान, नोरा फतेही ने अंतरराष्ट्रीय मंचों और प्रमुख खेल आयोजनों से मजबूत संबंध स्थापित किए हैं, जिनमें टी20 विश्व कप से संबंधित प्रस्तुतियां भी शामिल हैं। प्रत्येक प्रदर्शन ने दुनिया भर के दर्शकों को मंत्रमुग्ध करने में सक्षम एक गतिशील कलाकार के रूप में उनकी प्रतिष्ठा को बढ़ाया है।

फीफा विश्व कप 2026 के उद्घाटन समारोह में उनकी आगामी प्रस्तुति उनके वैश्विक करियर का एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित होने की उम्मीद है। टोरंटो में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्यातिप्राप्त कलाकारों के साथ मंच साझा करते हुए, उनसे विश्व के सबसे बड़े आयोजनों में से एक में अपनी विशिष्ट ऊर्जा, संगीत और प्रभावशाली प्रस्तुति देने की उम्मीद है। इस आयोजन के अलावा, नोरा फतेही हनी सिंह के साथ अपने आई-पॉप सिंगल 'बॉडी रोल' को शनिवार को रिलीज़ करने की तैयारी में हैं। इस गाने की वैश्विक लोकप्रियता को लेकर काफी उत्सुकता है।

व्यापार

इन्वेस्टर एजुकेशन के लिए अब 30 दिन पुराने शेयर बाजार डेटा का होगा इस्तेमाल

एजेंसी नई दिल्ली

बाजार नियामक भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (SEBI) ने शुक्रवार को निवेशक जागरूकता और शैक्षणिक गतिविधियों (Investor Education) से जुड़े नियमों में महत्वपूर्ण बदलाव किया है। सेबी ने अब शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए शेयर मूल्य डेटा साझा करने के लिए 30 दिन की एकसमान समय-सीमा (Uniform Timeline) तय कर दी है। यह नया नियम 1 जुलाई, 2026 से प्रभावी होगा। इस कदम का मुख्य उद्देश्य बाजार के रियल-टाइम डेटा के दुरुपयोग को रोकना और साथ ही शैक्षणिक सामग्री की प्रासंगिकता बनाए रखना है।

भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) ने एक परिपत्र में कहा कि यह नयी रूपरेखा एक जुलाई से प्रभावी होगी। इसका उद्देश्य बाजार आंकड़ों के दुरुपयोग को रोकने और शैक्षणिक सामग्री को प्रासंगिक बनाए रखने के बीच संतुलन बनाना है।

सेबी ने मई, 2024 में शेयर बाजारों द्वारा 'लाइव' बाजार आंकड़ों के उपयोग को केवल कारोबार और उससे जुड़े कार्यों तक ही सीमित कर दिया था और शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए एक दिन की देरी के साथ आंकड़ा उपयोग की अनुमति दी थी। जनवरी, 2025 में नियम को और भी सख्त करते हुए केवल शैक्षणिक गतिविधियों में लगे संस्थानों के लिए ही तीन महीने पुराने आंकड़ों के उपयोग की शर्त लागू की गई थी। मौजूदा व्यवस्था में शैक्षणिक संस्थान सामग्री तैयार करने के लिए एक दिन की देरी वाला आंकड़ा प्राप्त कर सकते थे, लेकिन कक्षाओं या अन्य माध्यमों में उपयोग के लिए तीन महीने पुराने आंकड़ें तक ही सीमित थे।

सेबी ने कहा कि आंकड़ों में एक दिन की देरी इसके दुरुपयोग की आशंका को पूरी तरह कम नहीं कर पाती थी, जबकि तीन महीने की देरी से शैक्षणिक सामग्री की प्रासंगिकता प्रभावित होती थी। इस सुझाव के आधार पर अब आंकड़ों के साझा करने और उपयोग दोनों के लिए ही 30 दिन की समान देरी तय की गई है। हालांकि, राष्ट्रीय प्रतिभूति बाजार संस्थान (एनआईएसएम) को सिमुलेशन लैब में उपयोग के लिए एक दिन की देरी के साथ बाजार मूल्य आंकड़ों तक पहुंच मिलती रहेगी।

आरबीआई अधिकारियों का हल्लाबोल, नई पदोन्नति नीति के खिलाफ प्रदर्शन

एजेंसी नई दिल्ली

भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) में पदोन्नति के नए नियमों को लेकर विवाद गहरा गया है। आरबीआई के अधिकारियों के सबसे बड़े संगठन, रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया ऑफिसर्स एसोसिएशन (आरबीआईओए) ने नई पदोन्नति नीति के खिलाफ मोर्चा खोलते हुए शुक्रवार को देशव्यापी प्रदर्शन किया। संगठन ने आरबीआई गवर्नर संजय मल्होत्रा को पत्र लिखकर इस मामले में तत्काल हस्तक्षेप करने की मांग की है।

आरबीआई के विभिन्न क्षेत्रीय कार्यालयों और मुंबई स्थित केंद्रीय मुख्यालय में कार्यरत अधिकारियों ने शुक्रवार को नई पदोन्नति नीति के खिलाफ प्रदर्शन किया। नई नीति में पदोन्नति को रिक्तियों की उपलब्धता से जोड़ा गया है, जबकि पहले समयबद्ध पदोन्नति प्रणाली लागू थी।

रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया ऑफिसर्स एसोसिएशन (आरबीआईओए) ने आठ मई के पत्र में कहा कि केंद्रीय बैंक ने उनकी गंभीर चिंताओं, आपत्तियों और रचनात्मक सुझावों पर पर्याप्त विचार किए बिना संशोधित पदोन्नति नीति को लागू करने का निर्णय लिया है, जिससे अधिकारी समुदाय में व्यापक असंतोष, निराशा और मनोबल में गिरावट आई है। संगठन ने कहा कि विभिन्न ग्रेड में पदोन्नति रुकने से विशेषकर युवा अधिकारियों में असंतोष बढ़ रहा है, जिन्हें लंबे समय तक एक ही पद पर बने रहने की स्थिति का सामना करना पड़ रहा है। पत्र में कहा गया है कि पूर्व में विभिन्न बैठकों में गवर्नर ने समयबद्ध पदोन्नति की संभावना का संकेत दिया था, लेकिन अंतिम नीति में इस पहलू को शामिल नहीं किया गया।

आरबीआईओए के अनुसार, लगभग 8,000 आरबीआई अधिकारी इस बदलाव से प्रभावित हो सकते हैं। संगठन ने मांग की कि संशोधित नीति को तत्काल प्रभाव से स्थगित किया जाए और आरबीआईओए के साथ विस्तृत परामर्श कर इसकी समीक्षा की जाए। आरबीआईओए ने कहा, "हम शीर्ष प्रबंधन से अनुरोध करते हैं कि इस मामले पर तत्काल पुनर्विचार किया जाए और सगठन के साथ परामर्श कर संशोधित पदोन्नति नीति की व्यापक समीक्षा शुरू की जाए,

सेंमसंग के सीईओ ने किया बड़े इनोवेशन प्रोग्राम का ऐलान

एजेंसी नई दिल्ली

दक्षिण कोरिया की प्रमुख इलेक्ट्रॉनिक्स कंपनी सैमसंग ने शुक्रवार को भारत में अपने प्रमुख नवाचार और शिक्षा कार्यक्रम सैमसंग सॉल्व फॉर टुमारो के पांचवें संस्करण को शुरू करने की घोषणा की। कंपनी ने एक बयान में कहा कि यह कार्यक्रम भारत की अगली पीढ़ी के युवा नवोन्मेषकों को वास्तविक समस्याओं के समाधान के लिए प्रौद्योगिकी आधारित उपाय विकसित करने के लिए सशक्त बनाने के उद्देश्य से तैयार किया गया है।

कंपनी के अनुसार, वर्ष 2026 के संस्करण में शीर्ष चार विजेता टीमों को दो करोड़ रुपये तक का इनक्यूबेशन अनुदान दिया जाएगा, जिससे वे अपने विचारों को आगे विकसित कर सकें। इसके लिए भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) दिल्ली में इनक्यूबेशन सहायता भी प्रदान की जाएगी। इसके अलावा, शीर्ष 20 टीमों को 20 लाख रुपये तथा उसके बाद शीर्ष 40 टीमों को आठ लाख रुपये के साथ सैमसंग के उपकरण और मेंटरशिप सहायता दी जाएगी।

सैमसंग अध्यक्ष (दक्षिण पश्चिम एशिया) एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) जे बी पार्क ने कहा, "2026 संस्करण के साथ हम नवाचार को भारत के अधिक गहराई तक ले जा रहे हैं, स्कूली स्तर तक अपनी पहुंच को दोगुना से भी अधिक बढ़ा रहे हैं और युवा परिवर्तनकर्ताओं के लिए अवसरों के दायरे का विस्तार कर रहे हैं।"

उन्होंने कहा कि यह कार्यक्रम डिज़ाइन आधारित सोच, कौशल विकास, उद्योग अनुभव और स्टार्टअप सहायता के माध्यम से भारत की नवाचार यात्रा को सशक्त बनाने के प्रति सैमसंग की प्रतिबद्धता को दर्शाता है, जो 'डिजिटल इंडिया' के दृष्टिकोण के अनुरूप है। कंपनी ने कहा कि भारत में 30 वर्ष पूरे होने के अवसर पर सैमसंग इस कार्यक्रम के दायरे और महत्वाकांक्षा को और बढ़ा रही है, जिससे देश के नवाचार तंत्र को मजबूती मिलेगी।

देवी पार्वती की ममता ने दिलाया विष्णुजी को बद्रीनाथ में स्थान, शिवजी पहुंचे केदार

बद्रीनाथ धाम जो आज विष्णुजी का स्थान है, वह सतयुग में भगवान शिव और मां पार्वती का निवास स्थान हुआ करता था। जिसका नाम बद्री वन था। लेकिन एक दिन भ्रमण करते हुए विष्णुजी को वह स्थान इतना भा गया कि उसे पाने के लिए उन्होंने अद्भुत लीला रची। जिसके चलते विष्णुजी को बद्रीनाथ मिला और शिवजी केदार पहुंच गए। बद्रीनाथ धाम जो आज भगवान विष्णुजी को समर्पित है, वह कभी भगवान शिव और माता पार्वती का स्थान हुआ करता था। लेकिन विष्णुजी की लीलाओं के बारे में तो हर कोई जानता है जो बेहद अद्भुत और मन मोहने वाली होते हैं। एक बार भ्रमण करते हुए विष्णुजी को बद्रीनाथ धाम इतना भा गया था कि उन्होंने वहां पर अपना स्थान बनाने का निश्चय कर लिया। लेकिन इससे पहले उनके सामने चुनौती यह थी कि उन्हें इसके लिए शिवजी और माता पार्वती को मनाना था जिन्हें बद्रीनाथ बेहद प्रिय था। इसका उपाय निकालते हुए भगवान विष्णुजी ने एक ऐसी अत्यंत मनमोहक लीला रची कि बद्रीनाथ धाम उनका हो गया और शिवजी केदारनाथ पहुंच गए। आइए विस्तार से जानें पूरी कथा।

चार धामों में से एक बद्रीनाथ का स्थान सतयुग में बद्री वन कहलाता था। वहां भगवान शिव और माता पार्वती की कुटिया थी जहां दोनों निवास करते थे। बद्री वन का वातावरण बहुत ही शांत, मनमोहक और प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर था। ऐसे में शिवजी और पार्वती मां को वह स्थान अत्यंत प्रिय था। फिर एक बार जब विष्णु भगवान भ्रमण करते हुए बद्री वन पहुंचे तो उन्हें वहां वातावरण बहुत भाया। तभी विष्णुजी ने यह निश्चय किया की इसी स्थान को वो अपना निवास स्थान बनाएंगे। इसके लिए शिव भगवान ने अनुमति भी दे दी लेकिन, साथ ही एक शर्त भी रखी। उन्होंने कहा कि अगर तुम पार्वती माता को इसके लिए माना लो, तो इस स्थान पर तुम निवास कर सकते हो। माता पार्वती को मनाने के लिए भगवान विष्णु ने उपाय निकाला और अपनी लीला रची। उन्होंने नन्हे बालक का रूप धारण किया और उनकी

कुटिया के द्वार पर जाकर जोर-जोर से विलाप करने लगे। विष्णुजी का बाल स्वरूप अत्यंत मनमोहक था। जब वे विलाप कर रहे थे, तो उनकी आवाज सुनकर माता पार्वती का हृदय पसीज गया और वो बालक को उठाने के लिए आगे बढ़नी लगीं। उस समय भगवान शिव जी ने उन्हें खूब समझाने का प्रयास किया की ऐसा मत करो, क्योंकि वह जानते थे की यह और कुछ नहीं बल्कि विष्णुजी द्वारा रचाई गई लीला है। उनके मना करने के बावजूद अपनी ममता और स्नेह के कारण पार्वती माता जाकर बालक को अपने साथ कुटिया में ले लाईं। नन्हे बालक को कुटिया में लाकर माता पार्वती ने उन्हें दूध पिलाया और चुप कराकर अपनी कुटिया में ही सुला दिया। जब बालक सो गया, तो भगवान शिव और माता पार्वती कुछ समय के लिए बाहर भ्रमण पर गए थे। बस फिर क्या था, बाल स्वरूपी विष्णुजी ने कुटिया अंदर से बंद कर ली और जब शिव-पार्वतीजी वापस लौटे तो उन्होंने देखा की द्वार अंदर से बंद है। कई बार खटखटाने पर भी विष्णुजी ने दरवाजा नहीं खोला। तब भगवान शिव और माता पार्वती ने वह स्थान विष्णुजी को सौंप दिया और खुद कई योजन दूर केदार चले गए। जिसे आज केदारनाथ धाम के नाम से जाना जाता है।

सूर्य का वृषभ राशि में गोचर, तुला समेत ये 3 राशियां रहें अलर्ट

15 मई 2026 को ग्रहों के राजा सूर्य देव राशि परिवर्तन करने जा रहे हैं। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार, सूर्य ग्रह लगभग 1 महीने तक एक राशि में स्थित रहते हैं और जिसके बाद अगले राशि चक्र में प्रवेश करते हैं। ज्योतिष में सूर्य देव का राशि परिवर्तन को संक्रांति कहते हैं, जो कि धार्मिक और ज्योतिषीय दोनों दृष्टियों से विशेष महत्व होता है। सूर्य देव 15 मई को सुबह प्रातः 06:00 बजे मेष राशि से निकलकर वृषभ राशि में प्रवेश करेंगे और 15 जून 2026 तक इसी राशि में स्थित रहने वाला है। इस समय को वृषभ संक्रांति के नाम से जाना जाता है, जो कि जीवन में स्थिरता, भौतिक सुख-सुविधाओं और आर्थिक संसाधनों से जुड़ी ऊर्जा को एक्टिव करता है। इस गोचर से सभी 12 राशियों पर असर देखने को मिलेगा। आइए आपको बताते हैं सूर्य का वृषभ राशि में यह गोचर आपकी राशि पर किस प्रकार का प्रभाव डालेगा।

मेष राशि : सूर्य का गोचर मेष राशि के जातकों के लिए धन, वाणी और पारिवारिक जीवन को प्रभावित करेगा। इस समय आपका आत्मविश्वास बढ़ेगा और व्यक्तित्व प्रभावशाली रहने वाला है। हालांकि, बोलचाल में कठोरता बचना जरुरी है। परिवार में छोटी-मोटी गलतफहमियां उत्पन्न हो सकती हैं। संवाद को संतुलन में रखें। हेल्थ के मामले में सिरदर्द हो सकता है या थकान से परेशान रह सकते हैं। प्रेम जीवन में मधुरता रहेगी।

वृषभ राशि : चूंकि वृषभ राशि में सूर्य देव प्रवेश करने जा रहे हैं, तो इस राशि के जातकों के लिए काफी बड़ा बदलाव आएगा। आपका व्यक्तित्व और आत्मविश्वास बढ़ेगा। आर्थिक मामलों में काफी लाभ प्राप्त होगा और संपत्ति से जुड़े अवसर प्राप्त हो सकता है। लेकिन अहंकार बढ़ने से रिश्तों में तनाव होगा। विनम्र बनें रहे और परिवार में माता से सहयोग मिलेगा और जीवनशैली में सुधार आएगा।

मिथुन राशि : मिथुन राशि के लिए खर्च और मानसिक स्थिति को प्रभावित करेगा। अचानक से खर्च बढ़ सकता है। आध्यात्मिक रुचि बढ़ेगी और आप मानसिक शांति की तलाश करेंगे। हेल्थ में नींद की कमी या थकान हो सकती है। वर्कप्लेस पर अलर्ट रहे और विरोधियों से बचकर रहे हैं।

कर्क राशि : कर्क राशि के जातकों के लिए आय में वृद्धि होगी। इससे आर्थिक स्थिति मजबूत होने के संकेत मिलते हैं। रुक हुए सारे कार्य आपके पूर्ण होंगे और करियर में आगे बढ़ने के लिए अवसर मिलेंगे। नौकरीपेशा लोगों को वरिष्ठों का सहयोग मिलेगा और व्यापार में भी लाभ के योग बनेंगे। लेकिन प्रेम जीवन में हल्की अनबन या विचारों मतभेद देखने मिल सकता है। संवाद बनाए रखना जरुरी है। हेल्थ नॉर्मल रहेगी और बेहतर जीवनशैली रहेगी।

सिंह राशि : सिंह राशि के जातकों के लिए यह ग्रह परिवर्तन करियर के क्षेत्र में बेहद शुभ संकेत दे रहा है। सूर्य की स्थिति आपके कार्यक्षेत्र को मजबूत बनाएगी, जिससे नौकरी और व्यापार में उन्नति के नए अवसर प्राप्त होंगे। पदोन्नति, मान-सम्मान और सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि के प्रबल योग बन रहे हैं। पारिवारिक जीवन सुखद रहेगा और स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां भी काफी हद तक दूर हो सकती हैं।

कन्या राशि : कन्या राशि के जातकों के लिए यह ग्रह परिवर्तन किस्मत और ज्ञान से जुड़े क्षेत्रों में सकारात्मक प्रभाव करेगा। इस दौरान विदेश यात्रा के अवसर मिल सकते हैं या विदेशी संपर्कों से लाभ होने की संभावना है। आध्यात्मिक गतिविधियों, पूजा-पाठ और धार्मिक यात्राओं की ओर आपका झुकाव बढ़ सकता है। समाज में प्रतिष्ठा और सम्मान में वृद्धि होगी तथा मेहनत के अनुरूप अच्छे परिणाम मिलने के संकेत हैं। हालांकि, पिता की सेहत को लेकर सतर्क रहने और अनावश्यक खर्चों पर नियंत्रण रखने की आवश्यकता रहेगी।

तुला राशि : इस राशि के जातक के लिए यह समय काफी चुनौतीपूर्ण वाला हो सकता है क्योंकि हेल्थ और खर्चों पर उतार-चढ़ाव देखने को मिलेगा। अचानक खर्चे बढ़ सकते हैं और मानसिक तनाव हो सकता है। कार्यस्थल पर अलर्ट रहे और अनैतिक कार्यों से बचें। सही प्रयास करने पर स्थिति में सुधार होगा।

वृश्चिक राशि : वृश्चिक राशि वालों के लिए सूर्य का यह गोचर करियर और सामाजिक छवि के मामले में लाभदायक रहने वाला है। सूर्य की यह स्थिति कार्यक्षेत्र में नई संभावनाओं के द्वार खोल सकती है। नौकरी करने वाले लोगों को प्रमोशन, नई जिम्मेदारियां या आय में बढ़ोतरी जैसी खुशखबरी मिल सकती है। कारोबार से जुड़े जातकों को भी अच्छे परिणाम मिलने के संकेत हैं और व्यापार विस्तार के अवसर प्राप्त हो सकते हैं। आपकी लगन और मेहनत का सकारात्मक प्रभाव दिखाई देगा।

धनु राशि : धनु राशि वालों के लिए यह समय अच्छा रहने वाला है। सूर्य भाग्य भाव में स्वामी होकर छठे भाव में स्थित रहेगा। इससे प्रतियोगी परीक्षाओं, कानूनी मामलों और विवादों में जीत के योग बनेंगे। रुका हुआ धन मिलने की संभावना है। नौकरी और करियर में मेहनत के बाद अच्छे परिणाम मिलेंगे। इस दौरान खर्चों में बढ़ोतरी होगी।

मकर राशि : मकर राशि के लोगों को कार्य क्षेत्र में अचानक से सफलता और धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे, लेकिन कुछ जरूरी कामों में बाधा या देरी का सामना भी करना पड़ सकता है। छात्रों के लिए एकाग्रता बनाए रखना थोड़ा चुनौतीपूर्ण रह सकता है, इसलिए पढ़ाई में अतिरिक्त मेहनत की जरूरत होगी। संतान पक्ष को लेकर मन में चिंता बनी रह सकती है। स्वास्थ्य के मामले में शरीर में गर्मी बढ़ने या पित्त से जुड़ी समस्याएं परेशान कर सकती हैं, इसलिए खानपान और दिनचर्या का विशेष ध्यान रखना आवश्यक होगा। वहीं आर्थिक मामलों में निवेश या शेयर बाजार से अप्रत्याशित फायदा मिलने की संभावना भी बन रही है।

कुंभ राशिः कुंभ राशि के जातकों के लिए सूर्य का गोचर से घरेलू और भावनात्मक पहलुओं प्रभावित करेगा। सूर्य चतुर्थ भाव में स्थित रहेगा, जिससे घर, परिवार और मानसिक शांति जुड़े मामलों में उतार-चढ़ाव देखने को मिल सकते हैं। भौतिक सुख-सुविधाएं बढ़ सकती हैं। मानसिक संतुलन बनाए रखने में मुश्किल होगा। परिवार में मतभेद होना या तनाव की स्थिति बन सकती है। बिजनस करने वाले को लाभ मिलेगा। सोच-समझकर फैसला करें।

मीन राशि : सूर्य के गोचर से मीन राशि वालों को आत्मविश्वास और साहस को बढ़ेगा। सूर्य देवन छठे भाव का स्वामी होकर तीसरे भाव में स्थित रहेगा। इस अवधि में आपके साहस, ऊर्जा और मेहनत में अच्छा इजाफा देखने को मिलेगा। आप अपने कार्यों को पूरे उत्साह और दृढ़ विश्वास के साथ पूरा करेंगे। इस दौरान छोटी दूरी की यात्राएं होने की संभावना है, जो लाभदायक साबित हो सकती हैं। विरोधियों के मुकाबले आपकी स्थिति मजबूत रहेगी और अपने परिश्रम के बल पर आप बेहतर उपलब्धियां हासिल कर पाएंगे। नौकरी और व्यापार दोनों क्षेत्रों में आगे बढ़ने के सकारात्मक अवसर प्राप्त होने के संकेत हैं।

राशिफल : मेहनत से आय के नए स्रोत बनेंगे, खर्चों में उतार-चढ़ाव के संकेत

मेष : वृषभ राशि में शुक्रदेव आपकी निरंतर आर्थिक वृद्धि का समर्थन कर रहे हैं। आज मेहनत के दम पर आय के नए स्रोत बन सकते हैं और चंद्रमा का लाभ भाव में जाना धन प्राप्ति के लिए शुभ है। हालांकि, बारहवें भाव में मंगलदेव और शनिदेव की उपस्थिति खर्च की अधिकता की ओर इशारा कर रही है। खुशहाली या दिखावे में पैसा बर्बाद करने से बचें। निवेश के मामले में बहुत सतर्क रहें और बचत के अनुशासन को अपनी प्राथमिकता बनाएं।

वृषभ : दूसरे भाव में विराजमान बृहस्पतिदेव फाइनेंशियल स्टेबिलिटी और सही फैसला लेने में आपकी मदद करेंगे। व्यापार या संचार के माध्यमों से आज लाभ होने की पूरी संभावना है। बारहवें भाव की सक्रियता के कारण अचानक कुछ बड़े खर्चे सामने आ सकते हैं, इसलिए अनावश्यक खरीदारी से बचें। करियर के माध्यम से धन लाभ के अवसर मिलेंगे। निवेश की योजना सोच-समझकर बनाएं और जल्दबाजी के बजाय धैर्य से काम लें।

मिथुन : सुबह के समय आठवें भाव का प्रभाव आपके खर्चों को बढ़ा सकता है या किसी वित्तीय चिंता का कारण बन सकता है। फिलहाल जोखिम भरे निवेश से पूरी तरह दूरी बना लेना ही समझदारी है। दोपहर बाद जब चंद्रमा नौवें भाव में प्रवेश करेंगे, तब भाग्य का साथ मिलेगा। आपकी राशि में बैठे बृहस्पतिदेव आपको सही निर्णय लेने की शक्ति देंगे। बारहवें भाव में शुक्रदेव की उपस्थिति सुख-सुविधाएं पर खर्च करा सकती है, इसलिए बजट का संतुलन बनाए रखें।

कर्क : आठवें भाव की सक्रियता आज अचानक होने वाले खर्चों या उतार-चढ़ाव का संकेत दे रही है। किसी भी प्रकार की सट्टेबाजी या जोखिम वाले निवेश से आज दूर रहें। ग्यारहवें भाव में शुक्रदेव की स्थिति दोस्तों या किसी पेशेवर समूह के माध्यम से लाभ दिला सकती है। बृहस्पतिदेव के प्रभाव से यात्रा या धार्मिक कार्य पर धन खर्च हो सकता है। अपनी आय और व्यय के बीच एक मजबूत संतुलन बनाना आज की सबसे बड़ी जरूरत है।

सिंह : ग्यारहवें भाव में बृहस्पतिदेव का होना आपकी आय में बढ़ोतरी और लाभ का संकेत है। आपको सहयोगियों या नेटवर्किंग के माध्यम से अच्छे अवसर मिल सकते हैं। दसवें भाव के शुक्रदेव करियर के माध्यम से आर्थिक लाभ दिला रहे हैं। हालांकि, मंगल और शनि का आठवें भाव पर प्रभाव अचानक होने वाले खर्चों की चेतावनी दे रहा है। वित्तीय योजना बहुत सावधानी से बनाएं। स्थिरता तब आएगी

जब आप खर्चों में अनुशासन बनाए रखेंगे।

कन्या : दसवें भाव के बृहस्पतिदेव, रिवॉर्ड्स और वित्तीय लाभ के योग बना रहे हैं। भाग्य भाव में शुक्रदेव की स्थिति भी आर्थिक मामलों में आपका साथ देगी। हालांकि, छठे भाव की सक्रियता स्वास्थ्य या दैनिक दिनचर्या पर कुछ ज्यादा खर्च करा सकती है। अनावश्यक खर्चों पर लगाम लगाएं और बचत की आदत डालें। अनुशासित प्रयासों से ही आप धन संचय करने में सफल होंगे, इसलिए योजना बनाकर चलें।

तुला : आठवें भाव में शुक्रदेव की उपस्थिति आर्थिक उतार-चढ़ाव या अचानक खर्चों के संकेत दे रही है। जोखिम भरे निवेश से आज बचना ही अच्छा होगा। हालांकि, नौवें भाव के बृहस्पतिदेव लंबी अवधि की योजना में भाग्य का साथ दिलाएंगे। चंद्रमा का पंचम भाव में गोचर रचनात्मक कार्यों से लाभ दिला सकता है। सट्टेबाजी या शेयर बाजार में पैसा से पहले अच्छी तरह सोच लें। व्यवहारिक योजना ही आज आपको आर्थिक सुरक्षा देगी।

वृश्चिक : आठवें भाव में बृहस्पति देव अचानक वित्तीय परिवर्तन ला सकते हैं, इसलिए निवेश के मामलों में सावधान रहें। सुबह के समय व्यापार या बातचीत के माध्यम से लाभ मिलने के योग है। सातवें भाव में शुक्रदेव साझेदारी से धन लाभ के संकेत दे रहे हैं। हालांकि, घर या संपत्ति से जुड़े कुछ खर्चे भारी पड़ सकते हैं। अपने वित्त का प्रबंधन बहुत बारीकी से करें और भविष्य के लिए बचत पर जोर दें।

धनु : फाइनेंसः वित्तीय योजना और बचत के लिए सुबह का समय बहुत अच्छा है। आज आर्थिक स्थिरता पाने पर अपना ध्यान रहेगा। घर या सुख-सुविधाओं पर कुछ खर्च होने की संभावना है। दोपहर के बाद संचार, व्यापार या छोटे वेंचर से धन लाभ के योग बन रहे हैं। जल्दबाजी में कोई भी आर्थिक फैसला न लें। छठे भाव में शुक्रदेव के कारण स्वास्थ्य या दैनिक दिनचर्या से जुड़े कार्यों पर धन खर्च हो सकता है, इसलिए अनुशासन का पालन करें।

मकर : दूसरे भाव (धन भाव) की सक्रियता के कारण आज आपका पूरा ध्यान कर्ज के लेन-देन पर रहेगा। आप बचत या निवेश की नई योजनाएं बना सकते हैं। राहु की उपस्थिति भ्रम पैदा कर सकती है, इसलिए किसी के बहकावे में आकर जोखिम भरा निवेश न करें। पांचवें भाव में शुक्रदेव रचनात्मक कार्यों से लाभ दिलाएंगे, पर सावधानी जरूरी है। बृहस्पतिदेव की छठे भाव में स्थिति बताती है कि कठिन परिश्रम से ही आय स्थिर बनी रहेगी।

कुंभ : दूसरे भाव में मंगलदेव और शनिदेव की उपस्थिति धन के मामलों में दबाव पैदा कर सकती है। आप खर्चों को लेकर थोड़ा तनाव या बंधा हुआ महसूस करेंगे। दोपहर के बाद जब चंद्रमा आपकी ही राशि में आएंगे, तब आप आर्थिक फैसलों पर नियंत्रण कर पाएंगे। जोश में आकर पैसा खर्च न करें। पांचवें भाव के बृहस्पतिदेव क्रिएटिव या बौद्धिक कार्यों से लाभ दिला सकते हैं। अपनी वित्तीय योजना बहुत संभलकर बनाएं।

करियरः सुबह के समय काम की गति थोड़ी धीमी हो सकती है । आपको एकाग्रता बनाए रखने में थोड़ी परेशानी हो सकती है। दिन के शुरुआत में कोई भी बड़ा फैसला न लें। दोपहर बाद चंद्रमा के आपकी राशि में आते ही आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। आप पहल करेंगे और कार्यों को प्रभावी ढंग से संभालेंगे। तीसरा भाव संचार और प्रयासों का समर्थन कर रहा है, लेकिन बुध के अस्त होने से गलतफहमी संभव है। अपनी बात बहुत स्पष्टता से कहें।

मीन : सुबह के समय सामाजिक संपर्कों और नेटवर्किंग से लाभ मिल सकते हैं। हालांकि, दोपहर बाद बारहवें भाव की सक्रियता अनावश्यक खर्चों का संकेत दे रही है। मेष राशि में बुध के अस्त होने से वित्तीय दस्तावेजों में भ्रम हो सकता है, इसलिए कोई भी हस्ताक्षर करने से पहले अच्छी तरह जांच लें। चौथे भाव के बृहस्पतिदेव लंबी अवधि की स्थिरता देंगे। आज खर्च करने के बजाय संचय करने पर अधिक ध्यान दें। सुबह नेटवर्किंग और टीम वर्क के लिए बहुत अच्छा है। आपको सहकर्मियों का पूरा सहयोग मिलेगा। दोपहर बाद चंद्रमा के बारहवें भाव में जाने से आपका ध्यान भटक सकता है इसलिए आप अकेले काम करना पसंद करेंगे। दिन के दूसरे भाग में महत्वपूर्ण पेशेवर निर्णय लेने से बचें। दूसरे भाव में सूर्य और अस्त बुध की उपस्थिति काम से जुड़े वित्तीय मामलों पर ध्यान दिलाएगी। बातचीत करते समय शब्दों का चुनाव बहुत सावधानी से करें।

निर्जला एकादशी का व्रत 24 एकादशियों के पुण्य फल के बराबर

निर्जला एकादशी को सभी एकादशियों में सबसे श्रेष्ठ और पवित्र माना जाता है। ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष में पड़ने वाली इस एकादशी के दिन पानी पीना वर्जित होता है, इसलिए इसे निर्जला एकादशी कहा जाता है। इस व्रत को अन्य एकादशियों में सबसे कठिन माना जाता है। साल भर पड़ने वाली 24 एकादशियों के बराबर पुण्य इस अकेले व्रत को करने से प्राप्त होता है। इसे भीमसेनी एकादशी के नाम से भी जाना जाता है। इस दिन शुद्ध मन और पूरे विधिवत भगवान विष्णु की पूजा और निर्जला व्रत रखने से सुख-समृद्धि प्राप्त और मोक्ष की प्राप्त होती है। आइए जानते हैं इस बार निर्जला एकादशी का व्रत कब रखा जाएगा और पारण का समय क्या रहेगा।

हिंदू पंचांग के अनुसार, ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष में पड़ने वाली इस एकादशी को निर्जला एकादशी का व्रत रखा जाता है। इस बार एकादशी तिथि का आरंभ 24 जून, बुधवार को शाम 6 बजकर 13 मिनट पर होगा और इसका समापन अगले दिन 25 जून, गुरुवार

को शाम 8 बजकर 10 मिनट पर हो जाएगा। ऐसे में उदयातिथि के अनुसार, 25 जून 2026 को निर्जला एकादशी का व्रत रखा जाएगा।

एकादशी व्रत का पारण द्वादशी तिथि पर करना उत्तम माना जाता है। ऐसे में निर्जला एकादशी व्रत का पारण 26 जून, शुक्रवार को किया जाएगा। व्रत पारण का शुभ मुहूर्त सुबह 5 बजकर 41 मिनट से लेकर सुबह 8 बजकर 25 मिनट तक रहेगा।

निर्जला एकादशी को क्यों कहते हैं भीमसेनी एकादशी?

मान्यता है कि पांचों पांडवों में से भीमसेन को सबसे अधिक भूख लगती थी। उनके लिए भूखा रहना संभव नहीं था। ऐसे में वह चाह कर भी व्रत नहीं रख पाते थे। ऐसे में उन्होंने महर्षि वेद व्यास को अपनी पीड़ा बताई। महर्षि ने तब भीमसेन को ज्येष्ठ माह के शुक्ल पक्ष में पड़ने वाली निर्जला एकादशी का व्रत करने की सलाह दी क्योंकि इससे 24 एकादशियों के व्रत का पुण्य मिलता है। इसी कारण इसे भीमसेनी एकादशी कहा जाता है।

मुलताई लोक अदालत में आपसी समझौते से सुलझे विवाद

सिविल कोर्ट में हुए समझौते, 111 पौधे भेंट किए

दैनिक कारखाने का सफर। बैतूल

मुलताई के सिविल कोर्ट में शनिवार को राष्ट्रीय लोक अदालत का शुभारंभ किया गया। इसका उद्घाटन प्रथम अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश यतेश सिसोदिया, द्वितीय अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश संजय भलावी, व्यवहार न्यायाधीश अभिजीत सिंह वास्कले, सरिता डावर वास्कले, लक्ष्मण डोडवे, निशा कुरिल और अधिवक्ता संघ अध्यक्ष सीएस चंदेल की उपस्थिति में हुआ। इस अवसर पर अधिवक्ता संघ के वरिष्ठ एवं कनिष्ठ अधिवक्ताओं के साथ न्यायालय कर्मचारी, विद्युत विभाग, बैंक और कई शासकीय विभागों के अधिकारी-कर्मचारी बड़ी संख्या में उपस्थित थे। वक्ताओं ने लोक अदालत को न्याय प्राप्ति का सरल, सुलभ और त्वरित माध्यम बताया और लोगों से इसका लाभ उठाने का आग्रह किया।

कार्यक्रम के दौरान समाजसेवी सतीष डोंगरदिये ने पर्यावरण संरक्षण का संदेश देते हुए व्यवहार न्यायालय मुलताई को 111 पौधे और गमले भेंट किए। न्यायाधीशों, अधिवक्ताओं और उपस्थित लोगों ने इस पहल की सराहना की।

लोक अदालत में पारिवारिक विवादों के निराकरण में भी सफलता मिली। जिला एवं सत्र न्यायाधीश संजय भलावी की अदालत में हिन्दू विवाह अधिनियम के एक विचाराधीन प्रकरण में अधिवक्ता टी.के. चौधरी और भारत भूषण चौधरी के प्रयासों से एक दंपति के बीच आपसी समझौता कराया गया। यह दंपति लंबे समय से अलग रह रहा था। दोनों पक्षों की सहमति से मामले का सौहार्दपूर्ण निराकरण हुआ, जिसकी उपस्थित लोगों ने सराहना की।

कार्यक्रम के अंत में अधिवक्ता संघ अध्यक्ष, न्यायाधीशों और अधिवक्ताओं ने लोक अदालत को सफल बनाने तथा अधिक से अधिक प्रकरणों का आपसी सहमति से निराकरण कराने का संकल्प लिया।

बैतूल में 22 वर्षीय युवती ने लगाई फांसी

नर्सिंग के साथ प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रही थी दीपिका

दैनिक कारखाने का सफर। बैतूल

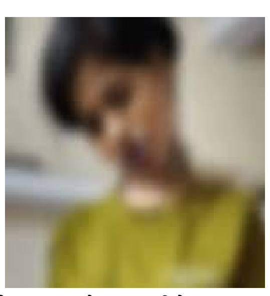

बैतूल शहर में वसंत पेट्रोल पंप के पास किराए के मकान में रहने वाली 22 वर्षीय एक युवती ने शुक्रवार को फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। मृतका की पहचान मूल रूप से टिगरिया गांव निवासी दीपिका पवार के रूप में हुई है, जो पिछले ढाई साल से यहां अपने पिता के साथ रह रही थी। जानकारी के अनुसार दीपिका नर्सिंग और सिलाई का काम करने के साथ-साथ विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी भी कर रही थी। शुक्रवार को दीपिका के पिता हमेशा की तरह कोसमी स्थित अपनी फैक्ट्री में ड्यूटी पर गए हुए थे। दिन में उन्होंने बेटी को फोन किया, लेकिन कोई जवाब नहीं मिला और शाम तक उसका मोबाइल भी बंद आने लगा। जब चिंतित पिता शाम को घर पहुंचे, तो उन्होंने कमरे का दरवाजा बंद पाया और अंदर देखने पर दीपिका पंखे से फंदे पर लटकी हुई मिली।

घटना की सूचना मिलने पर पुलिस तुरंत मौके पर पहुंची और शव को नीचे उतारकर पोस्टमार्टम के लिए जिला अस्पताल भिजवाया। जांच अधिकारी वसंत आहके ने बताया कि घटनास्थल या मृतका के पास से कोई भी सुसाइड नोट बरामद नहीं हुआ है। फिलहाल पुलिस ने मर्ग कायम कर युवती द्वारा आत्महत्या करने के कारणों की विस्तृत जांच शुरू कर दी है।

सैफुद्दीन शाजापुरवाला ने ताप्ती नगरी में लगाई झाड़ू

दैनिक कारखाने का सफर। मुलताई

मां ताप्ती की नगरी में बुधवार को सुबह चौराह सहित मार्ग पर 68 वर्षीय बुजुर्ग झाड़ू लगाते और कचरा उठाते नजर आए। बुजुर्ग के सिर पर तिरंगा और कपड़ों पर स्वच्छता का संदेश लिखा हुआ था। अंजान बुजुर्ग को नगरवासियों ने सफाई करते देखा तो हैरान रह गए। लोगों ने बुजुर्ग के पास पहुंचकर चर्चा की तो उन्होंने कहा वह देश को स्वच्छ बनाने के लिए निकले हैं। सुबह भोपाल निवासी सैफुद्दीन शाजापुरवाला स्कूटी पर सवार होकर मुलताई पहुंचे। मुख्य मार्ग सहित अन्य स्थानों पर कचरा देखकर झाड़ू लगाना शुरू कर दिया। झाड़ू लगाते हुए वह गांधी चौक पहुंचे। जहां नगर कांग्रेस अध्यक्ष सुमित शिवहरे ने सैफुद्दीन से चर्चा कर स्वच्छता में हाथ बटाया।

तपती दोपहरी में मानवता की मिसाल

घोड़ाडोंगरी रेलवे स्टेशन पर गायत्री परिवार का शीतल जल सेवा अभियान बना यात्रियों के लिए राहत का सहारा

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

भीषण गर्मी के इस दौर में जहां सूरज की तपिश लोगों का हाल बेहाल कर रही है,वहीं घोड़ाडोंगरी रेलवे स्टेशन पर मानव सेवा का एक ऐसा दृश्य देखने को मिल रहा है,जो हर किसी के मन को छू रहा है।अखिल विश्व गायत्री परिवार एवं नगर के सेवाभावी नागरिक इन दिनों रेलवे स्टेशन पर यात्रियों की प्यास बुझाने के लिए निरंतर जल सेवा अभियान चला रहे हैं।

इटारसी और नागपुर की ओर से आने वाली ट्रेन जैसे ही घोड़ाडोंगरी स्टेशन पर पहुंचती है,वैसे ही प्लेटफार्म पर सेवा मित्र सक्रिय हो जाते हैं।जनरल बोगियों की खिड़कियों से यात्री अपनी खाली बोतलें बाहर बढ़ा देते हैं और सेवा में जुटे लोग उन बोतलों को आरो युक्त ठंडे पानी से भर देते हैं। दोपहर की भीषण गर्मी में यह दृश्य मानो इंसानियत और सेवा भावना का जीवंत उदाहरण बन जाता है।एक पखवाड़े से लगातार चल रहे इस सेवा अभियान ने यात्रियों के दिलों में विशेष स्थान बना लिया है। कई यात्री सफर की थकान और गर्मी से परेशान होकर जब ठंडा पानी प्राप्त करते हैं तो उनके चेहरे पर सुकून साफ दिखाई देता है।वहीं सेवा कार्य में लगे लोगों के चेहरे पर भी आत्मसंतोष और मानव सेवा का गर्व झलकता है।गायत्री परिवार के कार्यकर्ताओं का कहना है कि प्यासे को पानी पिलाने से बड़ा कोई पुण्य नहीं। यही सोच लेकर नगर के अनेक सेवाभावी लोग इस अभियान से जुड़ रहे हैं।गायत्री परिवार के ब्लॉक समन्वयक डॉ. मनोज पाटनकर ने बताया कि यह अभियान आगामी 17 जून तक लगातार जारी रहेगा,ताकि गर्मी के दिनों में यात्रियों को राहत मिल सके।

इस सेवा कार्य में केवल श्रमदान ही नहीं बल्कि आर्थिक सहयोग भी बड़ी संख्या में सामने आ रहा है। आरो का पानी उपलब्ध कराने के लिए नगर के कई परिजन आगे बढ़कर सहयोग कर रहे हैं।सुनील मालवीय, अनुराग अग्रवाल,अनिल शर्मा,खेमराज पवार सहित अनेक लोगों ने नागरिकों से इस पुनीत कार्य में सहभागी बनने की अपील की है। प्रतिदिन इस अभियान में महादेव पांसे,दशरथ गिद, मुन्ना अमरवंशी,नितिन अग्रवाल,राघव अग्रवाल, राहत पवार,लकी मखीजा, नीरज सिनोटिया एवं अन्य सहयोगियों की सक्रिय भागीदारी रहती है।तपती गर्मी में यह सेवा अभियान केवल पानी बांटने का कार्य नहीं,बल्कि इंसानियत, संवेदनशीलता और सामाजिक एकता का ऐसा संदेश दे रहा है,जो हर किसी को मानव सेवा के लिए प्रेरित कर रहा है।

उत्तरप्रदेश में एक कपड़ा व्यापारी था युवक

बैतूल में पुराने आरटीओ ग्राउंड में युवक का शव मिला, बस टिकट और मोबाइल मिला

दैनिक कारखाने का सफर। बैतूल

बैतूल शहर के बस स्टैंड के पीछे स्थित पुराने आरटीओ ग्राउंड में शनिवार को एक युवक का शव मिलने से इलाके में सनसनी फैल गई। सूचना मिलते ही मौके पर लोगों की भीड़ जमा हो गई। पुलिस ने घटनास्थल पर पहुंचकर जांच शुरू की और शव को जिला अस्पताल की मर्चुरी में रखवाया।

शुरुआत में युवक की पहचान नहीं हो पाई थी, लेकिन बाद में पुलिस ने उसकी शिनाख्त नरेश कुमार के रूप में की। मृतक उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ निवासी बच्चू सिंह बंजारा का बेटा बताया जा रहा है। वह भैंसदेही में रुका हुआ था और कपड़े का व्यापार करता था। पुलिस को मृतक की जेब से एक बस टिकट, कुछ दस्तावेज और एक कीपैड मोबाइल फोन मिला है। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार युवक का शव मैदान में संदिग्ध अवस्था में पड़ा था। मृतक की उम्र करीब 35 वर्ष बताई जा रही है। उसने नीली जींस और सफेद शर्ट पहन रखी थी तथा चेहरे पर दाढ़ी थी।

पुलिस ने घटनास्थल का निरीक्षण कर आसपास के लोगों से पूछताछ की है। मृतक के परिजनों को सूचना दे दी गई है। उनके आने के बाद शव का पोस्टमार्टम कराया जाएगा। पुलिस का कहना है कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही मौत के सही कारणों का पता चल सकेगा।

मामले की जांच हर पहलू से की जा रही है। जरूरत पड़ने पर आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज भी खंगाली जाएगी, ताकि युवक की अंतिम गतिविधियों और घटना से जुड़े तथ्यों का पता लगाया जा सके। घटना के बाद इलाके में लोग मामले के खुलासे का इंतजार कर रहे हैं।

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक मधुवर मोहन द्विवेदी द्वारा इंडिपेंडेट प्रेस, 11 प्रेस काम्पलेक्स, एमपी नगर जोन-1 भोपाल 462023 म.प्र. से मुद्रित एवं 201 ब्लाक ई, सागर प्रीमियम टावर जेके हॉस्पिटल, कोलार रोड, भोपाल म.प्र. से प्रकाशित।
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल न्यायालय रहेगा) संपादक- सुनील यादव, समाचार संपादक- राहुल कौशिक। फोन नं. 0755-4262585-9425006706, मो. नंबर 9826697203, 9926288166, RNI.No. MPHIN/2020/78949